मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

अक्टूबर - दिसम्बर 2020

RNI Reference No : 1322876 • Title Code : MPHIN34795 • Year : 4 • Edition : 16

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

अक्टूबर - दिसम्बर 2020

Patron :

Rajesh Shrivastav

Principal Chief Conservator of Forests

(HoFF), Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :

Anand Kumar

Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Rajesh Kumar

Additional Principal Chief Conservator of Forests
(CAMPA)

J.S. Chauhan

Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Wildlife)

Atul Jain

Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Madhya Pradesh Rajya Van Vikas Nigam Limited)

K. Raman

Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Green India Mission)

Chitranjan Tyagi

Additional Principal Chief Conservator of Forests
(JFM / Development)

Atul Shrivastav

Additional Principal Chief Conservator of Forests
(M.P. State Minor Forest Produce Trading & Development Co-operative Federation)

Alvin Burman

DCF(Research, Extension and Lok Vaniki)

B.K. Dhar

Prachar Adhikari(Samanvay)

Editor :

Dr. Sanjay Kumar Shukla
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lokvaniki) Bhopal

Contact :

Prachar Prasar Prakosth, Room No. 140,
Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 0755-2524293

Prachar Prasar Prakosth Team :

Deepak Meshram
Gaurav Rajput

Owner & Publisher :

Prachar Prasar Prakosth (M.P.F.D.)
Printed by Madhya Pradesh Madhyam
Bhopal
Contact : 0755-2524293

वनांचल संदेश

अक्टूबर - दिसम्बर 2020

माननीय वनमंत्री द्वारा म.प्र. राज्य वन विकास निगम के अध्यक्ष का प्रभार ग्रहण	6
वन्यप्राणी सप्ताह 2020 आयोजन :-	7
* प्रमुख सचिव, वन द्वारा वन्य प्राणी सप्ताह का उद्घाटन	
* वन विहार में वन्यप्राणी सप्ताह में विभिन्न आयोजन	
* राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह	
पुस्तक ''हमारा प्रयास वानिकी से समग्र विकास'' का विमोचन एवं वानिकी कार्यों की समीक्षा	16
जिला स्तरीय मध्यप्रदेश राज्य ऑनलाइन जैवविविधता क्विज़-2020 का आयोजन	18
तेंदुआ स्टेट 'मध्यप्रदेश'	19
Panna Biosphere Reserve	23
सफरनामा : वनश्री महिला क्लब 2020-21	26
Green India Mission : Transforming the Landscape Vulnerable to Climate Change	27
वन विकास निगम के रोपित क्षेत्र का प्रमुख सचिव वन, श्री अशोक बर्णवाल द्वारा निरीक्षण	30
म.प्र. राज्य वन विकास निगम द्वारा सामाजिक दायित्व निर्वहन	31
राज्य बांस मिशन : सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर की सफलता की कहानी	34
बफर क्षेत्र में सफर योजना का आरम्भ	36
भोपाल में नीलगाय और पक्षियों का रेस्क्यू	38
स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स द्वारा सफल कार्रवाई	39
सफलता की कहानी : निजी कृषि भूमि पर बांस रोपण द्वारा दोगनी आय	40
कविता : इसी जंगल में काटे हैं	41
भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति	42
अंतर्राष्ट्रीय वन्य दिवस	43
अखबारों के आईने में	44

संदेश

विभाग की त्रैमासिक पत्रिका ''वनांचल संदेश'' प्रकाशन के चार वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई। वन संसाधनों से समृद्ध मध्यप्रदेश में वन, वन्यजीव एवं वनवासी एक-दूसरे के परिपूरक हैं। वानिकी विकास एवं विस्तार से वनवासी कल्याण के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। प्रदेश में जन-भागीदारी के द्वारा वानिकी गतिविधियों के क्रियान्वयन से वानिकी विकास एवं संवर्धन के बेहतर परिणाम मिले हैं। इस दिशा में विभाग द्वारा किये जा रहे प्रयासों को वनांचल संदेश के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है।

भावी पीढ़ी को वन, जल, जीव तथा जंगल जैसे प्राकृतिक विषयों पर एक नूतन दिशा एवं उल्लास हेतु अभिनव प्रयोग ''वन्य प्राणी सप्ताह'' आयोजन का वर्णन इस अंक की अपनी विशेषता है। इन जनोन्मुखी प्रयासों को अभिलेखित करने तथा जनता से संवाद की दिशा में वनांचल संदेश की महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस सराहनीय प्रयास के लिये सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों एवं पाठकगण के योगदान को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

आनन्द कुमार
भा.व.से.

प्रधान मुख्य वन संरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल

संपादकीय

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश हम सबकी सकारात्मक भागीदारी से चलने वाला एक जीवंत संदेश वाहक है। विगत मध्यप्रदेश वनांचल संदेश की अपार सफलता, इस अंक को और अधिक रोचक तथा परिष्कृत बनाने के लिये प्रेरणादायक रही। वनांचल संदेश के इस अंक में प्रकाशित विभिन्न विभागीय गतिविधियां, विभाग का बहुआयामी दृष्टिकोण एवं क्रियाशीलता ढंग से प्रस्तुत किया गया है। वनांचल संदेश में हम विभाग द्वारा किए गए कार्यों तथा शासन की जनकल्याण की योजनाओं की जानकारियां प्रस्तुत करते हैं, और अपने कार्यों का आत्म विश्लेषण करते हैं।

इस अंक में वन्य प्राणी सप्ताह का आयोजन, इसमें प्रतियोगिताओं, प्रकृति शिविरों तथा कार्यक्रमों के माध्यम से जन सामान्य में वन्यप्राणियों की आवश्यकता तथा उनके संरक्षण के बारे में सजगता से वर्णन किया गया है। ऑनलाइन जैवविविधता क्विज प्रतियोगिता के द्वारा जैवविविधता का व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। विभाग के प्रयत्नों से पन्ना बायोस्फियर को यूनेस्को के वर्ल्ड नेटवर्क ऑफ बायोस्फियर रिजर्व में शामिल किया गया। इससे संरक्षण-संवर्धन के हमारे कार्यों को काफी बल मिलेगा। म.प्र. राज्य वन विकास निगम, जिसके अध्यक्ष माननीय वन मंत्री जी हैं, के द्वारा वृक्षारोपण के साथ-साथ कार्पोरेट सोशियल रिस्पांसिबिलिटी के लिए प्रशिक्षण, कौशल उन्नयन, वन समुदायों के लिए संसाधन विकास, आदि के कार्य किए गए। इन सबका समावेश वनांचल संदेश के इस अंक में किया गया है। साथ ही माननीय वन मंत्री डॉ. कुंवर विजयशाह जी के द्वारा बफर में सफर योजना के आरंभ की प्रस्तुति भी इस अंक में प्रस्तुत है।

वनांचल संदेश प्रकाशन की चार वर्ष की छोटी सी यात्रा में विभाग की विभिन्न गतिविधियों के प्रकाशन हेतु कई प्रयास किए गए, जिससे यह पत्रिका उत्तरोत्तर विभाग एवं विभाग के बाहर अपनी पहचान बना पाई है।

आशा है कि पाठकों को यह अंक पसंद आएगा। मध्यप्रदेश वनांचल संदेश के प्रस्तुतीकरण को हम और अच्छा कैसे बना सकते हैं, इसकी जानकारी आप मुझे apccfre@mp.gov.in पर भेज सकते हैं। मैं पूरा प्रयास करूंगा कि आगामी अंकों में इनका समावेश हो जाए। क्षेत्रीय अधिकारियों से यह अपेक्षा है कि वे शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी तथा विभाग के विविध प्रयासों की अधिकाधिक जानकारी साझा कर आगामी अंकों में योगदान देंगे।

शुभकामनाओं सहित।

डॉ. संजय कुमार शुक्ला
भा.व.से.
अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल

माननीय वनमंत्री द्वारा म.प्र. राज्य वन विकास निगम के अध्यक्ष का प्रभार ग्रहण

माननीय वन मंत्री महोदय डॉ. कुंवर विजय शाह, ने अध्यक्ष, म.प्र. राज्य वन विकास निगम पद का कार्यभार ग्रहण किया, दिनांक 10 दिसम्बर, 2020 को वन मंत्री जी द्वारा अध्यक्ष, म.प्र. राज्य वन विकास निगम का कार्यभार ग्रहण किया गया।

माननीय वन मंत्री महोदय डॉ. कुंवर विजय शाह, अध्यक्ष, म.प्र. राज्य वन विकास निगम के पद का कार्यभार ग्रहण करते हुये

निगम के प्रबंध संचालक श्री रमेश कुमार गुप्ता (भा.व.से.) ने नवागत अध्यक्ष का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुये निगम में संचालित विभिन्न गतिविधियों एवं उपलब्धियों से अवगत कराया। इस अवसर पर श्री शाह ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि निगम के सभी अधिकारी-कर्मचारी उपलब्धियों को हासिल करने में दूसरे निगमों के सामने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। उन्होंने अधिकारियों को आश्वस्त किया कि हितग्राहियों के लाभ के लिए धनराशि की कमी नहीं आने दी जाएगी। इस अवसर पर निगम के अपर प्रबंध संचालक श्री अतुल कुमार जैन (भा.व.से.) एवं श्री सुदीप सिंह (भा.व.से.) अपर प्रबंध संचालक (परि. नि.) सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण एवं निगम कर्मचारी संघ के अध्यक्ष श्री अजय श्रीवास्तव आदि उपस्थित थे।

वन्यप्राणी सप्ताह 2020 आयोजन

प्रमुख सचिव, वन द्वारा वन्यप्राणी सप्ताह का उद्घाटन

प्रतिवर्ष की भाँति वनविहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह का आयोजन दिनांक 01.10.2020 से 07.10.2020 तक किया गया। इस दौरान वन, वन्यप्राणी एवं पर्यावरण संरक्षण से सम्बोधन विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस वर्ष का राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह का आयोजन विगत वर्ष के आयोजन से कोविड-19 के कारण भिन्न था, क्योंकि अधिकांश कार्यक्रमों में कोविड - 19 के सिद्धांतों का पालन किया जाना था। प्रतिभागियों की संख्या विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान सीमित रखी गई एवं अधिकाधिक यह कोशिश की गई कि विभिन्न कार्यक्रम ऑनलाइन कराये जायें।

श्री अशोक बर्णवाल प्रमुख सचिव वन द्वारा फोटो प्रदर्शनी एवं सोवेनियर शॉप (विंध्य हर्बल संजीवनी केन्द्र) का उद्घाटन भी किया गया। सहयोगी संस्थाओं बांस मिशन, सामाजिक वानिकी, बायोडायवर्सिटी बोर्ड एवं रातापानी अभ्यारण्य की ईको विकास समिति बमनई द्वारा पेपर मेशी से बनाई गई वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया।

फोटोग्राफी एवं पेंटिंग प्रदर्शनी : वन्यप्राणी सप्ताह के दौरान वन्यप्राणियों पर आधारित फोटोग्राफ्स की प्रदर्शनी म.प्र. जैव विविधता बोर्ड, म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड, भोपाल बर्ड्स एवं स्थानीय फोटोग्राफर्स के सहयोग से लगाई गई, जिसमें सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया, तथा समस्त प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। फोटोग्राफी प्रतियोगिता के अंतर्गत 33 प्रतिभागियों ने भाग लेकर कुल 117 फोटोग्राफ्स का प्रदर्शन किया गया। श्रेष्ठ गिद्धों के फोटो की प्रदर्शनी एवं डॉ. संजय शुक्ला, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक का टिकिट संग्रह भी प्रदर्शित किया गया।

ऑनलाइन प्रतियोगिताएं – वन्यप्राणी सप्ताह समस्त प्रदेश से ऑनलाइन कार्यक्रमों में स्कूली छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। ऑनलाइन प्रतियोगिताओं में कविता प्रतियोगिता, जस्ट ए मिनिट प्रतियोगिता, फैंसी ड्रेस, वल्चर-विषयक फोटोग्राफी प्रतियोगिता, वाल-पेंटिंग प्रतियोगिता, मूर्तिकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिनमें से चयनित प्रतिभागियों की प्रविष्टियों को ऑनलाइन प्रसारित करने हेतु फेसबुक पर अपलोड किया गया।

पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर – वन्यप्राणी सप्ताह के दौरान 2 पक्षी दर्शन, प्रकृति शिविर, ''तितलियों को जानिए'' विषय तथा महिलाओं हेतु एक गुलाबी शिविर का आयोजन किया गया।

वार्तालाप – प्रदेश स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 के दौरान नई पहल करते हुये म.प्र. टाइगर फाउंडेशन सोसायटी के सहयोग से ''टाइगर्स फॉर वाटर सिक्यूरिटी'' विषय पर फेसबुक एवं यू ट्यूब पर सायं 4.00 बजे से 5.00 बजे तक ऑनलाइन सजीव वार्तालाप कार्यक्रम आयोजित किया गया। साथ ही वन विहार के एनीमल कीपर्स द्वारा किये जा रहे कार्यों से जन सामान्य को परिचित कराने हेतु एक परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें वन विहार आने वाले पर्यटकों ने भाग लिया तथा वन्यप्राणियों से जुड़े रोचक तथ्यों को जाना।

वन विहार में वन्यप्राणी सप्ताह में विभिन्न आयोजन

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 का शुभारंभ श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव वन म.प्र. शासन द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री राजेश श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, डॉ. अभय कुमार पाटिल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी, म.प्र. राज्य बांस मिशन, श्री आलोक कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) एवं मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक, श्री एस.एस. राजपूत, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य लघुवनोपज सहकारी संघ मर्यादित, श्री सी.के. पाटिल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन), श्री आनंद कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनु.वि. एवं लोकवानिकी), श्री राजेश कुमार, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कैम्पा), श्री पंकज श्रीवास्तव, निदेशक, भारतीय वन प्रबंध संस्थान, श्री जे.एस. चौहान, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी), श्री विवेक जैन, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र. लघु वनोपज संघ, श्री यू.के. सुबुद्धि, अपर मुख्य वन संरक्षक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम, श्री सत्यानंद, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम, श्री पी.एल. धीमान, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक म.प्र. मत्स्य महासंघ, श्री एच.एस. मोहंता, सचिव वन, म.प्र. शासन, श्री आर.पी. सिंह, सेवा निवृत्त अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, श्री रवीन्द्र सक्सेना, मुख्य वन संरक्षक भोपाल वृत्त, श्री एच.सी. गुप्ता, मुख्य वन संरक्षक सामाजिक वानिकी, श्री एच.एस. मिश्रा, वन संरक्षक एवं वनमंडलाधिकारी सामान्य वन मंडल भोपाल, श्रीमती कमलिका मोहंता, संचालक वन विहार,

श्री ए.के. जैन सहायक संचालक वन विहार एवं वरिष्ठ अधिकारी तथा सेवा निवृत्त वन अधिकारी तथा शालाओं के शिक्षक एवं विद्यार्थीगण तथा उनके अभिभावक एवं मीडियाकर्मी भी उपस्थित थे।

प्रथम दिवस- 01.10.2020

चित्रकला प्रतियोगिता - वन विहार राष्ट्रीय उद्यान स्थित विहार वीथिका में चित्रकला प्रतियोगिता संपन्न कराई गई, जिसमें कक्षा 9 से महाविद्यालय स्तर तक के प्रतिभागियों ने ''बाघ, तेंदुआ, बारासिंगा, कृष्ण मृग एवं चीतल'' विषय पर चित्रकारी का प्रदर्शन किया।

फोटोग्राफी प्रतियोगिता - फोटोग्राफी प्रतियोगिता में पूरे प्रदेश से शौकिया तथा व्यवसायिक फोटोग्राफर्स द्वारा प्रविष्टियां भेजी गईं।

रंगोली प्रतियोगिता - अपरान्ह 1.00 बजे से 3.00 बजे तक खुले वर्ग हेतु रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें ''बाघ, मोर एवं तितली'' विषय पर कुल 35 प्रतिभागियों ने सुंदर रंगोली का प्रदर्शन किया।

02.10.2020- द्वितीय दिवस

स्वच्छता अभियान कार्यक्रम - दिनांक 02.10.2020 को राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 के अंतर्गत वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में स्वच्छता अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कैमरा क्लब, यूथ ब्रिगेड, भोपाल सिटी इनफॉरमेशन पोर्टल, निर्माण परिवर्तन एवं भोपाल आई क्लीन संस्थाओं सहित अन्य स्वयंसेवी 92 व्यक्तियों तथा वन विहार के लगभग 60 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लेकर वन विहार के मुख्य मार्ग के दोनों ओर गेट क्रमांक 2 से गेट क्रमांक 1 तक पॉलीथीन, डिस्पोजल आदि की सफाई कर पर्यावरण एवं वन्यप्राणी संरक्षण में अपना योगदान दिया। श्रीमती कमलिका मोहंता, संचालक वन विहार द्वारा समस्त स्वयंसेवी व्यक्तियों एवं कर्मचारियों के 10 दल बनाकर सभी को कोविड-19 हेतु जारी निर्देशों का पालन करते हुये निर्धारित स्थलों पर सफाई कर स्वच्छता अभियान में अपना योगदान करने हेतु समझाइश दी गई। उक्त समस्त स्वयं सेवी व्यक्तियों को कोविड-19 हेतु जारी निर्देशों के अनुपालन में ग्लब्स, सेनेटाइटर, सर्जिकल कैप उपलब्ध कराये गये। साथ ही समस्त स्वयंसेवी व्यक्तियों को एक-एक टीशर्ट एवं मास्क भी वितरित किये गये।

ऑनलाइन कविता प्रतियोगिता - मध्यप्रदेश के विभिन्न वनमंडलों में आयोजित कविता प्रतियोगिता में चयन उपरांत प्राप्त जूनियर वर्ग की 10 एवं सीनियर वर्ग की 17 प्रविष्टियों का मूल्यांकन निर्णायकों द्वारा किया गया। चयनित कविता प्रतिभागियों की प्रविष्टियों को ऑनलाइन प्रसारित करने हेतु दिनांक 05.10.2020 को सायं 4.00 बजे से 5.00 बजे के मध्य फेसबुक पर अपलोड किया गया।

03.10.2020 (तृतीय दिवस)

पक्षी दर्शन व प्रकृति शिविर - दिनांक 03.10.2020 को राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 के अंतर्गत पक्षी दर्शन व प्रकृति शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में यूथ हॉस्टल लेक सिटी यूनिट के 50 प्रतिभागियों सहित 55 पक्षी प्रेमियों ने पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों के दर्शन किये, जिसमें प्रमुख लिटिल कार्मोरेंट, ग्रेट कार्मोरेंट, पर्पल सनबर्ड, ग्रीन बी ईटर, रेड मुनिया, विहिस्लिंग टील्स, मूरहैन, ड्रोंगो, सिल्वर बिल मुनिया, रॉबिन, नाईट हेरोन, ब्लैक रेड स्टार्ट, एशी प्रीनिया, जकाना, किंगफिशर, हेरान, लेपविंग, डब, व्हाईट ग्रोव वेगरेस, बया वीभर आदि को देखकर प्रतिभागी उत्साहित हो उठे। स्रोत व्यक्ति के रूप में श्री ए.के. खरे, डॉ. सुदेश वाघमारे, डॉ. संगीता राजगीर एवं मो. खालिक उपस्थित रहे।

खजाने की खोज – इस वर्ष इस नवीन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में ''प्रथम आओ प्रथम पाओ'' के सिद्धांत पर 20 टीमों को ही प्रवेश दिया जाना था परन्तु इसमें अनुमान से भी अधिक लगभग 80 टीमों द्वारा पंजीयन हेतु अनुरोध किया गया लेकिन पूर्व से निर्धारित केवल 20 टीमों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति दी गई यह प्रतियोगिता प्रात: 9.00 बजे विहार वीथिका में मध्यप्रदेश टाइगर फाउंडेशन सोसायटी द्वारा छात्र/छात्राओं एवं उनके परिवार हेतु आयोजित की गई, जिसमें इन टीमों (अधिकतम 4 व्यक्ति प्रति टीम) द्वारा उत्साहपूर्वक भाग लिया गया।

04.10.2020 (चतुर्थ दिवस)

''तितलियों को जानिए'' विषय पर नेचर कैम्प – दिनांक 04.10.2020 को राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 के अंतर्गत प्रात: 8.00 बजे से प्रथम बार तितलियों को जानिए विषय पर नेचर कैम्प का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में यूथ हॉस्टल, लेक सिटी यूनिट, वी.एन.एस. ग्रुप, कैमरा क्लब एवं इंदौर से आये 4 व्यक्तियों सहित 72 नेचर एवं तितली प्रेमियों ने तितलियों की विभिन्न प्रजातियों के दर्शन किये, जिसमें प्रमुख कॉमन टाइगर, स्ट्रिप्ड टाइगर, ब्लू टाइगर, कॉमन ग्रास यलो, ग्रे पेनसी एवं कॉमन इंडियन क्रो आदि को बहुसंख्या में देखकर प्रतिभागी उत्साहित हो उठे एवं तितलियों के सम्बंध में जानकारी प्राप्त करने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। स्रोत व्यक्ति के रूप में श्री शुभरंजन सेन, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, डॉ. संगीता राजगीर एवं मो. खालिक उपस्थित रहे।

''एनीमल कीपर एवं स्टाफ के साथ परिचर्चा'' – इस वर्ष कोविड – 19 महामारी के कारण अन्य कार्यक्रम के रूप में प्रात: 10.30 बजे विहार वीथिका में वन विहार के उपरोक्त कैम्प में सम्मिलित प्रतिभागियों की ''एनीमल कीपर एवं स्टाफ के साथ परिचर्चा'' आयोजित की गई, जिसमें 48 प्रतिभागियों ने भाग लिया। परिचर्चा में एनीमल कीपर्स द्वारा प्रतिभागियों को भालू, बाघ, तेंदुआ, गौर, हायना एवं सर्पों की देखभाल कैसे की जाती है, उनके भोजन, उपचार आदि के सम्बंध में जानकारी दी गई, जिसे उपस्थित प्रतिभागियों द्वारा बहुत पंसद किया गया। इस अवसर पर संचालक एवं सहायक संचालक वन विहार द्वारा भी पक्षियों, तितलियों एवं वन्यप्राणियों के सम्बंध में प्रतिभागियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया एवं भ्रांतियों को दूर करते हुये उन्हें आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गई। इसके साथ ही केरवा स्थित गिद्ध प्रजनन एवं संरक्षण केन्द्र के प्रभारी डॉ. रोहन श्रृंगारपुरे द्वारा मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली गिद्धों की प्रजातियों के संरक्षण, संवर्धन एवं गिद्धों की मानव जीवन में उपयोगिता के सम्बंध में प्रतिभागियों को जानकारी प्रदान कराई गई।

05.10.2020 (पंचम दिवस)

फेंसी ड्रेस प्रतियोगिता – ऑनलाइन 'फेंसी ड्रेस' प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रतिभागियों ने वन एवं वन्यप्राणी के रूप में तैयार होकर एक मिनिट का वीडियो तैयार कर इस कार्यालय को ई मेल किया। प्राप्त 14 प्रविष्टियों का मूल्यांकन निर्णायकों द्वारा किया गया। चयनित प्रविष्टियों को ऑनलाइन प्रसारण हेतु दिनांक 06.10.2020 को सायं 4.00 बजे फेसबुक पर अपलोड किया गया।

पक्षी दर्शन व प्रकृति शिविर – राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 के अंतर्गत दिनांक 05.10.2020 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में प्रात: 6.30 से 8.30 बजे तक पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर का आयोजन किया गया। उक्त शिविर में 28 पक्षी प्रेमियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सहायक संचालक, वन विहार श्री ए.के. जैन ने बर्ड वाचर को पक्षी अवलोकन के बेसिक नियमों से अवगत कराया और वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में पाये जाने वाले प्रमुख पक्षियों के बारे में जानकारी दी। शिविर में रिसोर्स पर्सन के रूप में पक्षी विशेषज्ञ श्री ए.के. खरे, डॉ. सुदेश वाघमारे, मो. खालिक एवं डॉ. संगीता राजगीर उपस्थित रहे। पक्षी प्रेमियों ने किंग फिशर, वूली नेक स्टार्क, कार्मोरेंट, लेसर विसलिंग टील, इग्रेट, रेड मुनिया, ग्रीन बी ईटर, बुलबुल, ब्लैक रेड स्टार्ट, एशी प्रीनिया, जकाना, डव, हेरोन आदि पक्षियों को पहचाना एवं उनसे जुड़ी अन्य रोचक जानकारियां ग्रहण कीं।

मेंहदी एवं पाम पेंटिंग प्रतियोगिता – दिनांक 05.10.2020 को ही द्वितीय प्रतियोगिता के रूप में प्रात: 11.00 बजे से 'वन्यप्राणी' थीम पर खुला वर्ग हेतु मेंहदी प्रतियोगिता एवं दोपहर 12.30 बजे से पाम पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें मेंहदी प्रतियोगिता में 21 प्रतिभागियों एवं पाम पेंटिंग में 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

06.10.2020 (षष्ठम दिवस)

पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर (गुलाबी शिविर) – राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 के दिनांक 06.10.2020 को प्रात: 6.30 से 8.30 बजे तक महिलाओं हेतु पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर (गुलाबी शिविर) का आयोजन किया गया। उक्त शिविर में 42 पक्षी प्रेमी महिलाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित वन विहार के प्रथम डायरेक्टर स्व. श्री पी.एम. लाड की पत्नी श्रीमती कमल लाड उपस्थित रहीं। इनके अतिरिक्त शिविर में रिसोर्स पर्सन के रूप में डॉ. संगीता राजगीर, सुश्री भावना जायसवाल, डॉ. गीतारानी गुप्ता भी उपस्थित रहीं। शिविर के दौरान संचालक, वन विहार श्रीमती कमलिका मोहंता भी उपस्थित रहीं। पक्षी प्रेमियों ने किंग फिशर, वूली नेक स्टार्क, ड्रोंगो, सिल्वर बिल मुनिया, रॉबिन, कार्मोरेंट, लेसर विसलिंग टील, इग्रेट, रेड मुनिया, ग्रीन बी ईटर, बुलबुल, ब्लैक रेड स्टार्ट, एशी प्रीनिया, जॅकाना, डब, हेरोन, रोलर आदि पक्षियों को देखकर पहचाना एवं उनके घोंसलों इत्यादि के बारे में जानकारी एकत्रित की।

सृजनात्मक कार्यशाला – द्वितीय प्रतियोगिता के रूप में प्रात: 11.00 बजे से स्कूली बच्चों हेतु सृजनात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विद्यालयों के कुल 38 बच्चों ने भाग लिया। इन विद्यार्थियों को श्री विनय सप्रे, से.नि. शिक्षक जवाहरलाल नेहरू, बाल भवन भोपाल द्वारा रंगीन कागज के माध्यम से विभिन्न पक्षी, तितलियाँ एवं फूलों की आकृतियाँ बनाना सिखाया गया। इस अवसर पर श्री अरविन्द अनुपम, मूर्तिकार क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय के द्वारा पेपर मेशी के माध्यम से सारस पक्षी बनाना सिखाया गया। इसके अतिरिक्त औबेदुल्लागंज वनमंडल की बमनई समिति के विशेषज्ञों द्वारा मुखौटा बनाना सिखाया गया। इसी दिन ऑनलाइन आयोजित 'जस्ट एक मिनट' एवं 'फेंसी ड्रेस' प्रतियोगिता की चयनित प्रविष्टियों का ऑनलाइन प्रसारण सायं 4.00 बजे से 5.00 बजे तक किया गया।

07.10.2020 (सप्तम दिवस)

फेस पेंटिंग प्रतियोगिता– दिनांक 07 अक्टूबर 2020 को ही प्रात: 9.00 बजे से विद्यालयीन छात्र/छात्राओं हेतु फेस पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों द्वारा अपने साथी के चेहरे पर वन तथा वन्यप्राणी विषय पर पेंटिंग किया जाना था। इस प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह वन विहार राष्ट्रीय उधान-जू भोपाल में डॉ. कुंवर विजय शाह जी माननीय मंत्री, वन, मध्यप्रदेश शासन के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव, वन, म.प्र. शासन, श्री राजेश श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, श्री. ए.बी. गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कैम्पा), श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) एवं मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक, श्री. एस.एस. राजपूत, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य लघुवनोपज सहकारी संघ मर्यादित, श्री. सी.के. पाटिल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन), श्री जे.एस. चौहान, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी), श्री. एच. एस. मोहंता, सचिव, वन, म.प्र. शासन एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के अतिरिक्त सेवानिवृत्त वन अधिकारी भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि महोदय द्वारा 'वल्चर एस्टीमेशन वर्ष 2019' का विमोचन किया। मुख्य अतिथि द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। साथ ही वर्ष 2019 एवं 2020 हेतु विभिन्न वर्गों में वन्यप्राणी संरक्षण हेतु किये गये उत्कृष्ट कार्यों हेतु कुल 39 अधिकारियों/कर्मचारियों को वन्यप्राणी संरक्षण पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। साथ ही इस अवसर पर वन विहार के स्थाई कर्मियों को जैकेट का वितरण भी मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। अपने उद्‌बोधन में मुख्य अतिथि महोदय द्वारा प्रकृति और वन्यप्राणियों की सुरक्षा, संवर्धन में तन और मन से सक्रिय सहयोग की अपील की एवं उनके द्वारा यह भी कहा कि वनों और वन्यप्राणियों की सुरक्षा और संवर्धन से ही समाज की उन्नति और विकास संभव है। इस वर्ष कोविड-19 के संबंध में केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुये राज्य स्तरीय वन्यप्रणी सप्ताह का आयोजन सीमित संख्या में वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में किया गया है। कोविड-19 को ध्यान में रखते हुये वॉल पेंटिंग, कविता, जस्ट ए मिनट, एवं फेंसी ड्रेस प्रतियोगिताएं ऑनलाइन आयोजित की गई। इनके अतिरिक्त वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं एवं खुले वर्ग हेतु वन्यप्राणी सप्ताह के दौरान चित्रकला, खजाने की खोज, पाम पेंटिंग, मेंहदी, फोटोग्राफी, फेस पेंटिंग, रंगोली आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन

समस्त प्रतियोगिताओं में लगभग 900 प्रतिभागियों ने भाग लिया। साथ ही वन्यप्राणी सप्ताह के दौरान फेसबुक एवं यू ट्यूब पर सजीव ऑनलाइन वार्तालाप एवं एनीमल कीपर तथा स्टाफ के साथ परिचर्चा का भी आयोजन किया गया।

शैक्षणिक गतिविधियों के अंतर्गत पक्षी दर्शन एवं प्रकृति शिविर, सृजनात्मक कार्यशाला, स्वच्छता अभियान, वन्यप्राणी फोटो प्रदर्शनी, श्रेष्ठ गिद्धों के फोटो की प्रदर्शनी, डॉ. संजय शुक्ला, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक का टिकिट संग्रह प्रदर्शनी आदि का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त महिलाओं हेतु पृथक शिविर (गुलाबी शिविर) का आयोजन भी किया गया।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) एवं मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक श्री आलोक कुमार द्वारा 01 से 07 अक्टूबर तक आयोजित राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2020 के अंतर्गत हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं शैक्षणिक गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में संचालक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान श्रीमती कमलिका मोहंता द्वारा सभी सम्माननीय अतिथियों, पुरस्कार विजेताओं, प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, अभिभावकों एवं सहयोगी अधिकारियों/कर्मचारियों, संस्थाओं- बांस मिशन, बायोडायवर्सिटी बोर्ड, सामाजिक वानिकी, मुख्य वन संरक्षक भोपाल, वनमंडल भोपाल एवं पण्डाल, अतिथि सत्कार व्यवस्थापक, प्रदर्श व्यवस्थापकों का आभार व्यक्त किया गया।

पुस्तक "हमारा प्रयास वानिकी से समग्र विकास" का विमोचन एवं वानिकी कार्यों की समीक्षा

माननीय डॉ. कुंवर विजय शाह जी, मंत्री, मध्यप्रदेश शासन एवं अध्यक्ष म.प्र. राज्य वन विकास निगम ने क्षेत्रीय अधिकारियों की बैठक दिनांक 29.12.2020 में निगम द्वारा संचालित योजनाओं और उनके क्रियान्वयन पर विस्तारपूर्वक चर्चा कर, वानिकी कार्यो की समीक्षा की। वन मंत्री जी ने क्षेत्रीय अधिकारियों को निर्देश दिये कि अपने-अपने क्षेत्र में वानिकी कार्यो की सतत् निगरानी रखी जाए। वन मंत्री जी ने निगम की गतिविधियों पर केन्द्रित पुस्तक 'हमारा प्रयास वानिकी से समग्र विकास' का विमोचन भी किया।

वन मंत्री महोदय ने अपने उद्बोधन में प्रदूषण निवारण में भागीदारी बढ़ाने हेतु कार्बन सिंक प्रोजेक्ट के अन्तर्गत शासकीय/अर्द्धशासकीय/ निजी संस्थानों के क्षेत्र में वित्त पोषित वृक्षारोपण करने तथा जिलाध्यक्ष द्वारा संस्थानों से उपलब्ध कराये गये वित्त से राजस्व भूमि जैसे ओंकारेश्वर आदि में वृक्षारोपण करने व इसी मद में नर्मदा नदी के पास हाईटेक नर्सरी का निर्माण करने हेतु मुख्य रूप से निर्देशित किया। उन्होंने यह भी कहा कि निगम द्वारा वृक्षारोपण कार्य उत्कृष्ट रूप से किया जा रहा है। इन कार्यों में जन भागीदारी बढ़ाने एवं शासन के अतिरिक्त वित्तीय संसाधन जुटाने के लिए इनका प्रचार-प्रसार भी किया जाना आवश्यक है।

निगम के प्रबंध संचालक, श्री आर.के. गुप्ता ने अवगत करवाया कि म.प्र. राज्य वन विकास निगम निम्न कोटि के वनक्षेत्र को उच्च कोटि के वनक्षेत्रों में परिवर्तित करने के मंतव्य से शासन की नीति के अनुरूप वृहद स्तर पर वृक्षारोपण कर रहा है। इन कार्यो के अंतर्गत सागौन वृक्षारोपण प्राथमिकता से किया जा रहा है। निगम द्धारा यह वृक्षारोपण कार्य शासन के अतिरिक्त वित्तीय संसाधन जुटाकर किये जा रहे है। निगम अपने स्थापनाकाल से सतत् लाभ में है।

क्षेत्रीय अधिकारियों की इस बैठक में अपर प्रबंध संचालक, श्री अतुल जैन, अपर प्रबंध संचालक, (वित्त/एवं लेखा) श्री प्रशांत ए. जाधव, अपर प्रबंध संचालक (प्रशासन) डॉ. रेनू सिंह अपर प्रबंध संचालक, (परियोजना निर्माण) श्री सुदीप सिंह, क्षेत्रीय मुख्य महाप्रबंधक, सिवनी श्री आर.के. यादव व क्षेत्रीय मुख्य महाप्रबंधक, भोपाल डॉ. यू.के. सुबुद्धि और सभी संभागीय प्रबंधक मौजूद थे।

जिला स्तरीय मध्यप्रदेश राज्य ऑनलाइन जैवविविधता क्विज़-2020 का आयोजन दिनांक 05.10.2020

'मध्यप्रदेश राज्य ऑनलाइन जैवविविधता क्विज 2020' का आयोजन मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल, मध्यप्रदेश स्कूल शिक्षा विभाग व वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ मान. डॉ. कुंवर विजय शाह, वन मंत्री व मान. इंदर सिंह परमार, राज्य मंत्री स्कूल शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार) एवं सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा दिनांक 18.08.2020 को किया गया था। इस परिप्रेक्ष्य में कोविड-19 जनित परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुये मध्यप्रदेश में मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता क्विज़-2020 का जिला स्तरीय आयोजन दिनांक 05 अक्टूबर 2020 (वन्यप्राणी सप्ताह के दौरान) को ऑनलाइन किया गया। प्रतियोगिता के लेवल-1 में बहुवैकल्पिक प्रश्न तथा लेवल-2 में मल्टीमीडिया क्विज़ प्रश्न सम्मिलित किये गये। प्रदेश के 52 जिलों के 4,392 विद्यालयीन टीम के 13,176 छात्र-छात्राओं द्वारा लेवल - 1 में भाग लिया गया।

प्रदेश में सागर जिले में सबसे अधिक 94 प्रतिशत टीमों द्वारा सहभागिता की गयी, वहीं दूसरी ओर शिवपुरी जिले में सबसे कम 39 प्रतिशत सहभागिता रही है। टीमों की संख्या की दृष्टि से मण्डला जिले की सर्वाधिक 176 टीमों ने इस क्विज़ प्रतियोगिता में भाग लिया।

जिला स्तरीय प्रतियोगिता में लेवल-1 की विजेता प्रथम 7 टीमों को लेवल-2 में मल्टीमीडिया हेतु चयनित किया गया। समस्त 52 जिलों से लेवल-2 में मल्टीमीडिया क्विज़ में कुल 364 टीमों के 1,092 छात्र-छात्राओं को चयनित किया गया।

मध्यप्रदेश राज्य ऑनलाइन जैवविविधता क्विज़-2020 में लेवल-2 मल्टीमीडिया क्विज परिणाम के आधार पर जिले की प्रथम 3 टीमों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) को जिला स्तरीय क्विज़ विजेता घोषित किया गया।

तेंदुआ स्टेट 'मध्यप्रदेश'

मध्यप्रदेश जो कि घर है अनगिनत सरीसर्प, कीट-पतंगों का यहां अनेक प्रकार के वन्यप्राणी बाघ, तेंदुआ, लकड़बघ्घा, सियार, भालू, ढोल, नीलगाय, हिरण, कृष्णमृग, बारासिंघा, चीतल, सांभर, गौर स्वच्छंद विचरण करते हैं। प्रदेश की वन्यप्राणी धरोहर के साथ मध्यप्रदेश सम्पूर्ण देश में वनों के क्षेत्रफल के मामले में भी प्रथम स्थान पर है। यहां के वन शुष्क पर्णपाती, मिश्रित पर्णपाती श्रेणी के वन हैं, यहां के वनों में शीशम, महुआ, सागौन आदि कई प्रकार के वृक्षों की प्रजातियां मुख्यत: पाई जाती हैं। मध्यप्रदेश में वन्यप्राणी संरक्षण की शुरूआत वर्ष 1933 से कान्हा अभ्यारण्य बनने के पश्चात आधिकारिक रूप से शुरू हुई। वैसे तो आदिकाल से ही राजा-रजवाड़े के समय अभ्यारण्य हेतु राज व्यवस्थाओं के अतिरिक्त पृथक से प्रबंधन किया जाता था यहां तक कि कई बार तो वन एवं वन्यप्राणी प्रबंधन हेतु मंत्री भी नियुक्त किये जाते थे, आजादी के पश्चात मध्यप्रदेश राज्य द्वारा राष्ट्रीय उद्यान अधिनियम 1955 लागू कर वन्यप्राणी संरक्षण में एक नया अध्याय प्रारंभ किया। मध्यप्रदेश के वन्यप्राणी प्रबंधन की ख्याति भारत में ही नहीं अपितु विश्व में भी जानी जाती है यहां कई प्रकार की संकटग्रस्त प्रजाति जैसे कि घड़ियाल, गिद्ध आदि जो कि एक समय विलुप्ति की कगार पर थे, यहां प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

अखिल भारतीय बाघ गणना 2018 में प्रदेश में 526 बाघ होने के साथ बाघ प्रदेश का दर्जा पुन: हासिल किया। मध्यप्रदेश वर्ष 2006 में हुई अखिल भारतीय बाघ गणना में 300 बाघों के साथ प्रथम स्थान पर था, किन्तु वर्ष 2010 व 2014 में हुई गणना में इनकी संख्या क्रमश: 257 व 308 ही आंकी गई जिसमें प्रदेश वर्ष 2014 के आंकलन के दौरान कर्नाटक व उत्तराखण्ड राज्य से पिछड़कर तीसरे पायदान पर आ गया था। पुन: बाघ प्रदेश का दर्जा हासिल करना एक बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य था इसके लिए वन विभाग के अधिकारी/कर्मचारियों ने दिन-रात एक कर दी वैसे तो संरक्षित क्षेत्र में बाघों का प्रबंधन व्यापक तौर पर हो जाता है किन्तु असंरक्षित क्षेत्र में विचरण करने वाले बाघ का प्रबंधन व उनके पदचिन्ह को ढूंढ़ना व सहजना अत्यंत ही कठिन कार्य होता है अखिल भारतीय बाघ गणना 2018 के लिए इस हेतु एक अलग ही नीति बनायी गई, जिसमें समस्त अधिकारी व कर्मचारियों को यह स्मरण कराया गया कि संरक्षित क्षेत्र के बाहर विचरण करने वाले बाघों का भी प्रबंधन उतना ही आवश्यक है जितना कि संरक्षित क्षेत्र के भीतर के बाघों का। संरक्षित क्षेत्र के बाहर बाघों का प्रबंधन अत्यंत कठिन कार्य है किन्तु वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारियों ने रात और दिन, ठंडी/सर्दी/बरसात किसी भी मौसम व अप्रिय स्थिति की परवाह किये बिना इस बाघ संरक्षण रूपी यज्ञ में अपनी आहुति दी, इसी का ही परिणाम है कि आज 526 बाघों के साथ मध्यप्रदेश प्रथम पायदान पर है व प्रदेश ने बाघ प्रदेश का दर्जा पुन: हासिल किया है।

अखिल भारतीय बाघ गणना के दौरान अन्य मांसाहारी वन्यप्राणियों का आंकलन भी किया गया था, जिसमें तेंदुआ प्रमुख था। वैसे तो यह भी कहा जाता है कि बाघ का संरक्षण सम्पूर्ण वन का संरक्षण होता है जिसमें बाघ के साथ-साथ ही अन्य मांसाहारी व शाकाहारी वन्यप्राणी का भी उचित देखभाल व प्रबंधन होता है, सभी वन्यप्राणी खाद्य श्रृंखला में किसी न किसी तरह एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं व प्रत्येक का इस खाद्य श्रृंखला में अपना ही योगदान है। प्रदेश में अखिल भारतीय बाघ गणना के दौरान अन्य मांसाहारी वन्यप्राणी तेंदुए आदि का भी व्यापक प्रबंधन किया गया था। तेंदुआ बहुत ही शर्मीला वन्यप्राणी होता है व हमेशा घने जंगलों में रहता है व आसानी से नजर नहीं आता है इस हेतु इसकी देखरेख करना व इसके गणना कार्य हेतु उपयोग होने वाले साक्ष्य का मिलना भी कठिन होता है किन्तु प्रदेश के वन अधिकारी/कर्मचारियों ने तेंदुए की उपस्थिति के साक्ष्य इकट्ठा करने में कोई कमी नहीं छोड़ी, जैसे-जैसे तेंदुआ आंकलन के परिणाम आने का समय नजदीक आ रहा था मध्यप्रदेश के समस्त वन्यप्राणी प्रेमी व अधिकारी इस परिणाम को लेकर उत्सुक थे। केन्द्रीय पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन, मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर ने अखिल भारतीय तेंदुओं के आंकलन की रिपोर्ट का विमोचन किया, जिसमें मध्यप्रदेश में सबसे अधिक 3421 तेंदुओं की उपस्थिति दर्ज हुई है। यह क्षण पूरे प्रदेश के लिये गर्व का क्षण था। इसी के साथ प्रदेश ने कर्नाटक व महाराष्ट्र को पछाड़ते हुए बाघ प्रदेश के साथ-साथ ही तेंदुआ

प्रदेश का दर्जा भी हासिल किया। प्रदेश में तेंदुओं की संख्या वर्ष 2014 में जहां 1817 आंकी गई थी वहीं वर्ष 2018 की गणना में बढ़कर 3421 पहुंच गई। वहीं कर्नाटक में 1783 और महाराष्ट्र में 1690 तेंदुओं की उपस्थिति दर्ज हुई इस तरह मध्यप्रदेश ने कर्नाटक व महाराष्ट्र को पछाड़ते हुए बाघ प्रदेश के साथ तेंदुआ प्रदेश का दर्जा भी प्राप्त किया। जहां सम्पूर्ण देश में 12852 तेंदुओं की उपस्थिति दर्ज हुई है व इनकी आबादी में 60 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है वहीं प्रदेश में इनकी संख्या में 80 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। यह प्रदेश सरकार की बाघ संरक्षण नीति का ही परिणाम है, जिसमें बाघों के साथ-साथ तेंदुओं की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई है।

देश में विगत कुछ समय में बाघ, तेंदुओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है जो इस बात का प्रमाण है कि देश में वन्यप्राणी संरक्षण के प्रयास उत्कृष्ट परिणाम दे रहे हैं और वन्यप्राणियों की संख्या और क्षेत्र की जैव विविधता में सुधार हो रहा है। संरक्षित क्षेत्रों के साथ-साथ अन्य असंरक्षित वनों में भी तेंदुए पाए जाते हैं। तेंदुओं के आंकलन के दौरान लगभग

50 हजार से अधिक तस्वीरें कैमरा ट्रेप के माध्यम से ली गईं, जिसमें से 5240 वयस्क तेंदुओं की पहचान की गई है। तेंदुओं की गणना करने के लिए खास सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल किया गया। सांख्यिकी विश्लेषणों के आधार पर देश में 12,852 तेंदुओं की उपस्थिति दर्ज हुई है। तेंदुओं की संख्या की गणना न केवल टाइगर रेंज स्टेट में की गई बल्कि गैर वन वाले क्षेत्र जैसे कॉफी, चाय के बागान और दूसरे भौगोलिक क्षेत्र में भी की गई, जहां पर तेंदुए पाए जाने की संभावना होती है। तेंदुओं की गणना में हिमालय के ऊंचाई वाले क्षेत्र, शुष्क क्षेत्र से लेकर पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्रों को शामिल नहीं किया गया है। इन क्षेत्रों को शामिल नहीं करने की प्रमुख वजह यह है कि इन क्षेत्रों में तेंदुओं की संख्या नगण्य हैं। देश में बाघ प्रबंधन का फायदा पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को हुआ है और उसी वजह से तेंदुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है।

मध्यप्रदेश देश में सर्वाधिक वन बीटों (वन के छोटे क्षेत्र) वाला राज्य है जहां 9000 से अधिक वन बीटें हैं कि देश की कुल वन बीटों का एक तिहाई है जिसका प्रबंधन करना सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। वर्ष 1990 के आसपास का समय वन्यप्राणियों के लिये अच्छा नहीं रहा, एकतरफ जहां देश में औद्योगिकीकरण की गति चरम पर थी नयी फैक्ट्री व कारखाने खोले जा रहे थे वहीं देश की प्राथमिकता वन एवं वन्यप्राणियों के अलावा विकास पर ज्यादा थी व वन्यप्राणियों के शिकार चरम पर थे। एक समय था जब देश में मध्यप्रदेश की पहचान घने जंगल व उसमें निवास करने वाले बाघों से होती थी, वहीं वर्ष 2008 के समय बाघों का घर कहा जाने वाला पन्ना टाइगर रिजर्व, बाघ विहीन हो गया। मध्यप्रदेश में अखिल भारतीय बाघ गणना 2006 में जहां 300 बाघ थे वहीं वर्ष 2010 व 2014 में इनकी संख्या में कमी आयी व प्रदेश से बाघ प्रदेश का तमगा छिनकर कर्नाटक राज्य को प्राप्त हुआ।

अखिल भारतीय बाघ गणना 2014 के परिणामों से सीख लेते हुये वर्ष 2018 की गणना को एक मिशन के तौर पर लिया गया इस हेतु विशेष रणनीति अपनाई गई जिसमें मुख्य ध्यान संरक्षित क्षेत्रों के बाहर विचरण करने वाले वन्यप्राणी पर रखा गया। संरक्षित क्षेत्रों के बाहर विचरण करने वाले वन्यप्राणी का प्रबंधन विभाग के लिये एक कड़ी चुनौती थी, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण कार्य शिकारियों से वन्यप्राणियों की सुरक्षा करना व उनके आवास व भोजन इत्यादि को सुरक्षित प्रबंधित करना था। विभाग के अधिकारियों/कर्मचारी ने विपरीत स्थितियों के बावजूद भी बाघों के प्रबंधन में कोई कसर नहीं छोड़ी जिसके परिणामस्वरूप प्रदेश ने खोया हुआ दर्जा फिर से प्राप्त किया तथा बाघ संरक्षण के साथ ही तेंदुए का प्रबंधन व संरक्षण भी हुआ, जिसमें प्रदेश को बाघ राज्य के साथ ही तेंदुए राज्य का भी तमगा हासिल हुआ।

देश में वन्यप्राणी गणना का कार्य 'वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया' द्वारा प्रत्येक चार वर्ष में किया जाता है। यह गणना लगभग दो साल तक चलने वाली एक लंबी प्रक्रिया है जो कि तीन चरणों में पूर्ण होती है प्रथम चरण का आंकलन प्रारंभिक स्तर पर साक्ष्य और अन्य आधार पर किया जाता है प्रथम चरण पूरी गणना का मुख्य आधार होता है। इसमें प्रमुख कार्य कार्नीवोर साइन सर्वे, बाघों के पगमार्क ज्ञात करना आदि होता है, कार्नीवोर साइन सर्वे का उद्देश्य यह जानना है कि मांसाहारी वन्यप्राणियों द्वारा सर्वे क्षेत्र (बीट) का उपयोग कितनी अधिक आवृती से किया जाता है। यदि कोई बाघ/तेंदुआ किसी बीट क्षेत्र में बार-बार जायेगा तो वहां उसके आने-जाने के साक्ष्य ज्यादा होंगे अपितु उन बीटों के जहां से वह कभी कभार गुजरता होगा। कार्नीवोर साइन सर्वे के साथ ही पगमार्क वन्यप्राणी की उपस्थिति के सबसे अच्छे प्रमाण होते हैं, किन्तु मध्यप्रदेश के वन क्षेत्रों में कठोर भू सतह एवं सूखे घास, पत्तों के कारण अधिकांश समय बाघों व तेंदुओं की उपस्थिति के बावजूद पगमार्क नहीं मिल पाते, इस कठिनाई को दूर करने के लिये उन बीटों के अंतर्गत जहां वन्यप्राणी विचरण की अधिक सम्भावना होती है, वहां पी.आई.पी. का सहारा लिया गया।

द्वितीय चरण वैज्ञानिकों द्वारा GIS Mapping/आंकलन का होता है। वहीं तृतीय चरण वैज्ञानिकों द्वारा कैमरा ट्रेप विश्लेषण आदि कार्य व प्रथम चरण में पाये गये साक्ष्यों का परीक्षण करना होता है।

गणना के लिये बनाई गई विशेष रणनीति के तहत उन स्थानों पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया गया जहां मांसाहारी वन्यप्राणी द्वारा मवेशियों के शिकार के

मामले अधिक दर्ज किये गये। टाइगर रिजर्व के बफर जोन/ असंरक्षित क्षेत्रों में मवेशी बाघ का पसंदीदा शिकार होते हैं जबकि प्रदेश सरकार मवेशी का शिकार होने पर मवेशी के मालिक को मुआवजा देती है। इन तथ्यों से अब यह साबित हो चला था कि तेंदुआ की उपस्थिति टाइगर रिजर्वों के कोर जोन के अलावा बफर जोन/असंरक्षित क्षेत्रों में अधिक थी एवं इसी ओर विशेष ध्यान दिया जाना था।

सबसे जरूरी यह था कि विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाये जिससे गणना में उपयोग होने वाली विभिन्न नवाचार GIS Mapping/Mstripe Software आदि के इस्तेमाल से कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाये। इस गणना में इस बार एक नवीन नवाचार किया गया जहां हमेशा से चली आ रही वरिष्ठ अधिकारी को प्रशिक्षण देने की प्रथा को तोड़ते हुये ग्राउन्ड स्टाफ (वन रक्षक, उप वन क्षेत्रपाल, क्षेत्रपाल) को प्रशिक्षण दिया गया एवं उन्हें ही प्रशिक्षण देकर मास्टर ट्रेनर बनाया गया, जो कि मास्टर ट्रेनर बनने के उपरांत अपने से वरिष्ठतम अधिकारियों को प्रशिक्षित करने का जिम्मा सौंपा गया, जिन्होंने वन रक्षक वरिष्ठतम अधिकारी जिनमें प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक तथा स्वयं सेवक मौजूद थे, को प्रशिक्षण दिया। यह प्रशिक्षण नवाचार इस नीति पर आधारित था कि ग्राउन्ड स्टाफ न केवल बाघ आंकलन के दौरान सटीक आंकड़ा प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि भविष्य में अपने क्षेत्र के बारे में और अधिक चौकस होकर विभाग को अपने क्षेत्र में विचरण करने वाले वन्यप्राणी की उपस्थिति के बारे में बेहतर जानकारी उपलब्ध करायेगा, जिससे कि वन्यप्राणियों का बेहतर प्रबंधन हो सकेगा।

मध्यप्रदेश के समस्त जिलों को 7 जोनों (कान्हा/ सतपुड़ा/बांधवगढ़/पेंच/पन्ना टाइगर रिजर्व, माधव राष्ट्रीय उद्यान व उज्जैन) में बांटकर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर व डबल्यू डबल्यू एफ संस्था ने अहम भूमिका निभाई।

इस बार के प्रशिक्षण कार्यक्रम में कर्मचारियों को उत्साहित करने व सूचनाओं का त्वरित संचारण के लिये सोशल मीडिया का भी सहारा लिया गया। कर्मचारियों/अधिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिये पोस्टरों व विभिन्न स्लोगन (नारा) का इस्तेमाल किया गया जिससे कर्मचारियों के मन में गणना के प्रति नया जोश उत्पन्न किया जिसके परिणाम से सभी परिचित हैं।

गणना के दौरान लगभग 12000 से अधिक वन कर्मी व सैकड़ों की संख्या में मौजूद स्वयं सेवकों ने वन्यप्राणी की मौजूदगी के साक्ष्य ढूंढ़ने के लिये जंगलों का चप्पा चप्पा छान मारा, अंतत: वन कर्मियों की मेहनत रंग लाई और प्रदेश ने तेंदुआ प्रदेश का दर्जा हासिल किया। प्रदेश को तेंदुआ प्रदेश का दर्जा हासिल करने का श्रेय इन्हीं 'ग्रीन सोल्डर्स' जिन्होंने अपने परिवारजनों से दूर रहकर व दुर्गम वनों में रहकर इस संरक्षण रूपी हवन में अपनी आहुति दी।

Panna Biosphere Reserve

In order to conserve the resources of the present protected area of biosphere and their rational use for the improvement of the relationship between man and environment as per UNESCO's aim under Man and Biosphere Programme, the Ministry of Environment and Forests, Govt of India designated Panna Area as Panna Biosphere Reserve on 25th August 2011. The PBR is the 18th Biosphere Reserve (BR) of India. Recently the United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization (UNESCO) has included the Panna Biosphere Reserve in its World Network of Biosphere Reserves (WNBR) in November 2020. It is 12 Biosphere Reserve of India and third in Madhya Pradesh to be included in the UNESCO list after Pachmarhi and Amarkantak.

Biosphere Reserves are representative parts of natural and cultural landscapes extending over large areas of terrestrial or coastal/marine ecosystems or a combination thereof and representative examples of biogeographic zones/provinces. The idea of the biosphere reserve was initiated by UNESCO in 1974 under the MAB with the objective of obtaining international cooperation for the conservation of the biospheres.

Panna Biosphere Reserve falls in bio-geographic zones of Deccan Peninsula (6) and Biotic Province of Central highlands (6C). The area is very near to confluence of Deccan Peninsula (Central Highlands 6C) and Gangetic Plain (7). The area represents unique ecosystem within narrow belt of table top mountains of Vindhyan Hill Ranges' and part of 'Bundelkhand' region. This includes the traditional agro ecosystems, dry deciduous forests of Teak, Salai, Kardhai, bamboo and mixed type of forests. The areas have different landuses, viz., forests, agriculture, water bodies, settlements and wasteland which provide ample scope for research and management. There are several rivers, streams and rivulets flow through the BR area provides ample growth to flora and water to wildlife and human inhabitation of the area. Forest comprises about 56.96% of Panna BR area and it also contains 3 protected areas i.e., Panna National Park, Gangau and Ken-Gharial sanctuaries. Panna National Park has also been

declared as Panna Tiger Reserve, have also been notified as Critical Tiger Habitat Area.

Panna BR has spread over an area of 2998.98 sq km. Out of the total area an area of 792.53 consists core zone. The entire core area possess thick forests as it falls under the notified National Park and Sanctuaries,. The core is surrounded by buffer zone which covers 987.20 sq km and transition zone surrounded the buffer zone covers an area 1219.25 sq km. Panna BR area includes ecologically rich forest pockets of North, South Panna and Chhatarpur Forest Divisions, and Protected areas of Panna district. It is represented by forests, seasonal as well as aquatic and marshy vegetations. The forests include dry deciduous forest. However, based on vegetative composition, it may be further divided into six forest types viz., southern dry deciduous teak forest, northern dry deciduous mixed forest, dry deciduous scrub forest, Salai forest, dry bamboo forest and Kardhai forest. From agro-climatic zone point of view, it falls under Bundelkhand and Kymore plateau of Satpura hill ranges.

The area has rich biodiversity, as it provides an ideal habitat for excellent growth and propagation of large number of species. A total of 1255 species of lower & higher plant have been reported from the area. Amongst them 982 species belongs to angiosperm. One of the most significant ecological aspect of the area is that it almost makes the northern most boundary of natural distribution of teak (Tectona grandis) and the eastern limits of Kardhai (Anogeissus pendula) forests.

The area is ideal and abode for many rare, endangered and threatened species. A total of 69 angiospermic species are observed to be rare. Out of these, 3 species namely Eriocaulon parviflorum, Oropetium roxburghianum and Themeda laxa are found to be endemic to India. Some of the rare plant species viz., Nirmali (Strychnos polatorum), Safed Musli (Chlorophytum tuberosum), Kalihari (Gloriosa superba), Bach (Acorus calamus), which are of high medicinal value, are also found in the area.

The Panna BR has a rich natural heritage with long history and tradition of wildlife conservation. The area is rich in wild animals-both by variety and by numbers. The area has been included in Tiger Reserves of India as it contains 'tiger' (now rehabilitated).Panna Tiger Reserve is one of the most important PA in the north-central highlands of India, as it links the eastern and western population of wild animals through the NE-SW running Vindhyan ranges. The area has great potential to provide an ideal habitat and breeding ground for several wild animals. As many as 34 mammalian species have been reported in area of Panna BR. These habitats also suit at least 2 species of lesser cats viz.,

Siyah Gosh (*Felis caracal*) and Jungle cat (*Felis chaus*). Black buck (*Antilope cervicapra*), an endangered species, is also found in the southern part of the BR area.

The area is also rich in avian fauna. A total of 281 species of birds reported in the area. The Ken river attracts number of avian species both pretty and good songsters. The Panna National Park can boast up the highest density of paradise flycatchers 'the State Bird of Madhya Pradesh'. Presently, there are several species of vulture which are on the brink of extinction. But still 7 of the 8 Indian vulture species are found in favorable habitat of BR. Out of which, long billed vulture and White-backed vulture are listed 'Critically Endangered' by IUCN, the World Conservation Union, in 2000. The Ken river, which flows through the entire area from south to north, is the abode of Long snouted Crocodile (Gharial) and Marsh Crocodile (Maggarmachha) and other aquatic fauna. The Crocodile *(Crocodilus palustris*) and long snouted Crocodile (*Gavialus aangeticus*) both co-exist in river Ken. This is rare occurrence as both species are generally found separately. The Gharial is listed as a critically endanger by IUCN.

In order to conserve the activities like Conservation of Water, Biodiversity & Rehabilitation of Landscape. In-situ & Ex-Situ conservation of rare and threatened plant species, Habitat improvement

etc. are being implement by State and Central Government to restore the ecology of the area. Besides, human interference is also checked in core and various places in buffer for conservation of biodiversity and limited areas are open to visitors for eco-tourism activities.

Biosphere Reserve area have rural settings with large tribal population which are the primitive inhabitants tribes of the forest. There are only three urban agglomerations. The region has large population of ST with the 19.80% of the total population. The SC population constitutes around 18.45%. They are depending on the traditional way of cultivation of rainfed crop, cattle rearing and Non-Timber Forest produce. Tendu patta has always been a source of seasonal income to all communities.

Among the non-forest component base of natural resources, mining of building stone (Vindhyan sandstone) is the most popular occupation. Biosphere Reserve as centre of conservation provide excellent location for bench mark studies on natural ecosystems vis-à-vis man modified ecosystems. Manmade lakes, managed forest and forestry, cattle husbandry, farming systems offer vast scope for further observation of co-existence of man, animal and forest. Three distinct levels- of total conservation, of sustainable development, and of unbridled development - would be available in close proximity, in the Biosphere reserve and outside it. This would provide opportunity for field oriented research, which is very essential.

सफरनामा

वनश्री महिला क्लब 2020-21

आलेख व प्रस्तुति : डॉ. सीमा श्रीवास्तव, श्रीमती मनीषा रमन

वनश्री महिला क्लब का 2020-21 का सफर बेहद रोमांचपूर्ण रहा। यद्यपि 2020 विषम परिस्थितियों के लिए याद किया जाएगा। जब कोरोना के गहन प्रकोप से आक्रांत सदस्यों ने अपनी ऊर्जा को घरों से ही क्लब को समर्पित किया। यद्यपि क्लब की सामान्य गतिविधियाँ कोरोना के कारण नहीं चल सकीं, परंतु सदस्यों ने जन्मदिन, तीज, त्योहारों में सोशल मीडिया के माध्यम से एक दूजे को जोड़े रखा। जुलाई/अगस्त माह सावन-भादों की हरियाली के विभिन्न रंगों व रसों से सजा। मेहंदी लगाकर, झूला झूल कर कविताओं, गीतों व नृत्यों के साथ सदस्यों ने घर पर सावन मनाया, पर वर्चुअलि जुड़े रह कर पूरे वन परिवार ने आनंद लिया।

सितम्बर माह में सदस्यों द्वारा सीहोर जिले के वन ग्रामों बेलूखेड़ा व मालीखेड़ा का भ्रमण कर मास्क, सेनेटाइजर, काढ़ा एवं खेल कूद सामग्री का वितरण व वृक्षारोपण किया गया। डॉ. तृप्ति सक्सेना व डॉ. कमल लाड द्वारा वन ग्रामवासियों को कोरोना से बचाव के सम्बंध में जानकारी प्रदाय की गयी।

वनश्री क्लब की सामाजिक क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि नवम्बर माह में श्री वेल्फेयर सेंटर का शुभारम्भ है, जिसका उद्देश्य वन सेवकों के परिवार के सदस्यों को नि:शुल्क सिलाई कढ़ाई कम्प्यूटर प्रशिक्षण देकर कौशल विकास कर आत्मनिर्भर बनाना है। सेंटर का शुभारम्भ माननीय श्रीमती भावना शाह पत्नी श्री विजय शाह, वन मंत्री, मध्यप्रदेश शासन, एवं श्रीमती नमिता बर्णवाल पत्नी श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव, वन द्वारा किया गया श्रीमती शाह द्वारा वेलफेयर सेंटर को दो अत्याधुनिक व्यावसायिक स्तर की सिलाई मशीनें व आरओ संयंत्र प्रदान किया गया व इसके संचालन में प्रत्येक स्तर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन भी दिया गया।

Green India Mission : Transforming the Landscape Vulnerable to Climate Change

Empowering Local Communities to become self dependent, with special focus on women : Aatm Nirbhar Bharat

K. Raman-APCCF, GIM
Dr. Swati Moghe SDC M Expert

Electrician and Motor-winding training, Village Handipani, Betul

The Madhya Pradesh Forest Department is implementing the Green India Mission covering 18 Forest Divisions in 9 different landscapes of the state. The mission covers areas which are very vulnerable to ecological degradation affecting the lives of the poorest community's n very remote villages of such landscapes. The mission is one of the 8 missions of the Ministry of Environment, Forest & Climate Change (MoEF&CC) under the National Action Plan for Climate change (NAPCC).

The mission aims at responding to climate change by acknowledging the key elements of enhancing carbon sinks in sustainably managed forest and other ecosystems, adaptation of vulnerable species/ecosystems to the climate change various beneficiary-oriented programs have been carried out in last 3 years under the APO in various landscapes. To achieve the target of increasing forest-based livelihood income of about 3 million households, the mission has initiated community driven local livelihood and capacity enhancing initatives to strengthen integrated practices of poor families for socio-economic well-being.

The mission activities are being implemented related to improving the ecological environment& landscapes; leveraging the concepts of community livelihoods and human resource efficiency for benefitting the poor villagers. The livelihood and community development activities implemented under Green India Mission have a holistic approach encompassing many components of education-awareness, skills development and capacity building.

Tailoring training, Village Powerjhand, Betul

The livelihood activities worked in sync with government programmes and facilitate linkages with the schemes for the project beneficiaries. The livelihood strategies identified focuses on working with rural communities at the micro level. Each activity related to livelihood enhancement is attuned to local needs, through an initial need

assessment during landscape planning. It was ensured that the provisions of livelihood opportunities are need based and contextual and contribute to a sustained improvement in the quality of life of rural households. Many stakeholder trainings embedded through support of state and regional skill building institutions and provided to identify poor women individuals & groups formed as SHGs in each mission district/region.

Powerjhanda ladies proceeding for their next destination : Shahi exports

Selected women working in Shahi Exports, Bengaluru

The livelihood interventions have resulted in increased livelihood asset base of the project beneficiaries in terms of natural, social and financial capital. These achievements in terms of increased asset base have translated into increase in income from various livelihood activities undertaken by the communities. Training programmes on skill development are implemented, to help improve the employability of the working population including school drop-outs, semi-skilled and un-skilled workers. Youth from underprivileged families find it equally difficult to enter the job market. The training courses includes - Repair of diesel engine and pump set mechanic; Basic electric work-Household wiring; Repair of domestic electrical appliances; Repair and Rewinding of Electric Motor, etc. 175 male youth were trained on electrician, machine operator, security guard, JCB operation etc besides 62 youth were trained on light motor driving and repair and service of two wheelers for various landscapes of GIM. Participative training methods adopted to provide technical skills. Training focuses on theoretical inputs and practical sessions on technical skills. Candidates were also provided hands on experience which helps them to assess their strengths and weaknesses in critical areas. It assists youth in developing necessary social and livelihood skills and also to crystallize and work towards realizing their ambitions and generate income.

Institution plays a cardinal role in facilitating the livelihood activities in ground for which many women SHG groups are formed especially for the group-based organizational model which is useful to undertake long term sustainability of the interventions. Also enables simple illiterate/semi-literate village women to grow in diverse direction as the learn to earn. Community based livelihood interventions empower women to think, act and venture on her own to not procure but to market products and to face the world without being anxious. Along with learning specific technical skills also developing soe skills (positive attitude values and believe in self) so that she can not only work as an entrepreneur but she can learn to become a woman of substance who transforms herself and her family future. In this connection more than 1200 women were trained for various livelihood activities like; Sewing & tailoring, Sanitary napkin making, Bee Keeping, mushroom cultivation, making Lac articles, Jute articles, paper envelop Achar-papad and Makram work etc.

Table -1 Number of beneficiaries (male & female) trained and employed after getting livelihood based skill development training

S.No.	Type of Training	Rs. In Lakh	No.'s Trained	No.'s Employed
1	Tailoring	17,71,752	1018	1018
2	Vermi compost	40,31,357	410	410
3	Bee keeping & Processing	10,79,400	248	248
4	Computer	4,02,600	151	135
5	Incense & Incense stick	13,22,281	65	65
6	Sanitary napkin	2,74,843	12	12
7	Leaf plate making	4,68,700	68	62
8	Mushroom production	75,000	108	108
9	Poultry	9,000	117	57
10	Herbal color	72,281	30	30
11	Lac production & handicraft	2,00,000	20	20
12	Motor vehicle driver	6,77,600	77	77
13	Security guard	17,65,000	208	188
14	Electrician	-	80	80
15	Skill/Livehood	4,84,155	501	55
16	Bamboo Handicraft	7,00,000	60	60
17	Flash Farming	16,500	201	201
18	Mahua collection	10,67,012	155	155
	Total	**1,44,17,481**	**3529**	**2981**

Ku Ritika Khande, Village Mudhua, master trainer

A success story has recently emerged in Bhaura and Shahpura Ranges of North Betul Forest Division, where 225 ladies were imparted tailoring training from the villages Chapda, Pahawadi, Powerjhanda, Semalpura, Jamnagari, Mudha and 64 youth are given trains of electrician and motor winding.

As a result of training, 18 women have been selected by the Shahi Exports based in Bangalore, who are mostly 5th to 8th standard school dropouts. They have started earning wages to the tune of Rs 9000/- pm .

The youth trained for electrician and motor winding in Mudha, Koylari, Handipani, Banabeda have earned a contract worth Rs 80,000/- from panchayat under Pradhan Mantri Aavas Yojana. To top it all Kumari Ritika Khande of forest village Handipani has been hired by the NGO "Rural Skills India" as a master trainer with a salary of Rs 6000/- pm. This is a big step in empowerment of local communities especially women in the Green India Mission landscape.

Looking to the success of these income generating livelihood initiatives, such interventions will be replicated and demonstrated in other villages in the state of MP by identifying/prioritizing and planning the village wise livelihood interventionsat the landscape level.

वन विकास निगम के रोपित क्षेत्र का प्रमुख सचिव वन, श्री अशोक बर्णवाल द्वारा निरीक्षण

प्रमुख सचिव वन, श्री अशोक बर्णवाल निरीक्षण के दौरान विभाग एवं निगम के वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा करते हुये

श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव वन, ने प्रवास के दौरान बांधवगढ़ से भोपाल आगमन के अवसर पर मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम के कुंडम परियोजना मंडल में किये गये वृक्षारोपण का निरीक्षण कर मार्गदर्शन दिया।

कुंडम परियोजना मंडल, के अंतर्गत रामपुर परिक्षेत्र, कक्ष क्रमांक 253 के 25 हेक्टेयर रोपण क्षेत्र में रोपित पौधा संख्या 24990 के निरीक्षण में पौधों की वृद्धि को देखते हुये प्रशंसा व्यक्त की। इस अवसर पर निगम के प्रबंध संचालक श्री आर.के. गुप्ता, व श्री बी.बी. सिंह, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कार्य आयोजना), श्री चितरंजन त्यागी अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (विकास), श्री अलोक दास, क्षेत्रीय मुख्य महाप्रबंधक, जबलपुर, श्री सत्यानंद, मुख्य कार्यपालन अधिकारी (इको टूरिज्म), श्री एच.एस. मोहंता, सचिव वन, व अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

म.प्र. राज्य वन विकास निगम द्वारा सामाजिक दायित्व निर्वहन

(हरियाली बढ़ाते हैं, सामाजिक उत्तरदायित्व भी निभाते हैं)

मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम शासन की नीति के अनुरूप वन विभाग द्वारा हस्तांतरित क्षेत्र में, संस्थानों के लिए संस्थान क्षेत्र में और संस्थानों के वित्त पोषित से निगम के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत वृहद स्तर पर वृक्षारोपण कार्य अपने स्थापनाकाल से ही सफलतापूर्वक कर रहा है। निगम पिछले कई वर्षों से अपने कार्यक्षेत्र में और उसके लगे वनक्षेत्रों में स्थानीय समुदायों के प्रति अपने सामाजिक दायित्व निर्वहन (CSR) के कार्य कर रहा है। वर्ष 2014 में सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के लिए चतुर्थ ग्रीनटेक सी.एस.आर. गोल्ड अवार्ड से निगम को सम्मानित भी किया गया था। यह सम्मान 29 जनवरी 2015 को कोलकाता में आयोजित ग्रीनटेक एन्वायरमेंट एण्ड सी.एस.आर. परिषद की पन्द्रहवीं वार्षिक कॉन्फ्रेंस में दिया गया है।

कर मुक्त लाभ से निगम निभाता है, सामाजिक दायित्व:- मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम अपने सकल लाभ में कर की राशि घटाकर जो कर मुक्त लाभ मिलता है उसकी दो प्रतिशत राशि सामाजिक दायित्वों के निर्वहन से जुड़ी योजनाओं पर खर्च करता है।

कंपनी अधिनियम, 2013 के द्वारा अधिसूचित अनुसूची VII के अनुसार निगमित सामाजिक दायित्व नीति में उल्लेखित गतिविधियां/कार्यकलापों के अंतर्गत निगम द्वारा भी निगमित सामाजिक दायित्व निर्वहन का कार्य किया जा रहा है। वर्ष 2019-20 के अंतर्गत ग्रामीणों के रोजगार को बढ़ावा देने हेतु कौशल विकास, शिक्षा से विकास की गतिविधियां, विद्यालयों का सुदृढ़ीकरण, स्वास्थ्य सुरक्षा, ग्रामीण क्षेत्रों में जल उपलब्धता, सामुदायिक भवन एवं सिलाई मशीन प्रशिक्षण/ वितरण तथा महिला सशक्तिकरण हेतु विभिन्न कार्य प्राथमिकता के आधार पर इस मद में किये जा रहे हैं।

निगम के निगमित सामाजिक दायित्व (CSR) कार्य:- निगम अपने कार्य क्षेत्र और उससे लगे वनक्षेत्रों में स्थानीय समुदायों के प्रति अपने सामाजिक दायित्व निर्वहन मद में बालकों, स्त्रियों और वयोवृद्धों को सशक्तजन से जोड़ने के लिए प्रशिक्षण,

विशेष शिक्षा से व्यावसायिक कौशल बढ़ाकर नियोजन और जीविका की बढ़ोतरी संबंधी परियोजनाओं में छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला, बैतूल, होशंगाबाद, कटनी, जबलपुर, उमरिया, रीवा-सीधी, खंडवा एवं सीहोर जिलों में कार्य कर रहा है।

निगम सामाजिक दायित्व निर्वहन मद में स्थानीय समुदायों के लोगों की भूख निर्धनता और कुपोषण का उन्मूलन तथा स्वास्थ्य देख-रेख के साथ ही स्वच्छता का संवर्धन और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराये जाने संबंधी कार्य भी संपादित कर रहा है।

निगम के सामाजिक दायित्व निर्वहन कार्यों में ग्रामीण एवं वनों के आसपास रहने वाले जनसमुदायों के लिए स्वास्थ शिविरों का आयोजन, कौशल उन्नयन, सिलाई मशीन वितरण एवं प्रशिक्षण, सामुदायिक भवनों, शौचालयों का निर्माण किया गया है। निगम द्वारा निर्मित सामुदायिक भवनों में सिलाई मशीनें रखी गई हैं। ग्रामीणों को रोजगार उन्मुखी कार्यों का प्रशिक्षण देने के लिए सामुदायिक भवनों का निर्माण सीहोर, उमरिया एवं विदिशा-रायसेन जिलों में किया गया। सामुदायिक भवन के निर्माण स्थल का चयन स्थानीय वन सुरक्षा/ग्राम वन समिति की भागीदारी से किए जाते हैं। सामुदायिक भवन में महिलाओं के लिए पृथक से शौचालय की व्यवस्था भी की गई है। सामुदायिक भवनों के रख-रखाव का कार्य संबंधित ग्राम वन/वनसुरक्षा समिति द्वारा किया जा रहा है एवं भवनों का उपयोग स्थानीय ग्रामीणों द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक समारोह के लिए किया जा रहा है। ग्रामीण महिलाओं का उक्त मशीन पर प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है जिसके संतोषजनक परिणाम आ रहे हैं। ग्रामीण महिलाओं के लिए रोजगार का सफल संसाधन विकसित हुआ है। स्थानीय ग्रामवासियों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए विभिन्न स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से स्वास्थ्य शिविर आयोजित किये गये हैं। स्वास्थ्य शिविरों में गर्भवती महिलाओं के लिए आयोजन किया गया जो उपयोगी सिद्ध हुआ।

वनक्षेत्र से लगे शासकीय विद्यायलों में बच्चों के बैठने के लिए डेस्क/टेबिल व आकर्षक बेंच, वाटर फिल्टर, खेलकूद सामग्री, लेखन सामग्री, वितरण एवं पेयजल व्यवस्था, आदि कार्य भी निगम के सी.एस.आर. में किये जा रहे हैं।

पर्यावरणीय संपोषण, परिस्थितिकीय संतुलन, वनस्पति जीव-जंतु का संरक्षण, पशु कल्याण, कृषि वानिकी, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित बनाए रखने के मंतव्य से वनक्षेत्रों से लगे हुए ग्रामों में उज्ज्वला योजना में पंजीकृत ग्रामीणों को गैस सिलेण्डर रिफिलिंग इत्यादि कार्य किये जा रहे हैं।

सी.एस.आर. में जल प्रबंधन का दायित्व भी निगम ने निभाया-

सामाजिक दायित्व के निर्वहन में मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम ने जल प्रबंधन के कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। निगम के वनक्षेत्रों में और आसपास जलप्रबंधन एवं निस्तार के लिए बोरी बंधान के निर्माण, कुएं का गहरीकरण, तालाब गहरीकरण, ट्यूबवेल/हेण्डपम्प से जल प्रदाय की व्यवस्था की है। इस प्रकार वन क्षेत्रों में एवं वनों के आस-पास के क्षेत्र में नलकूप एवं कुओं का निर्माण किया जाकर ग्रामीणों को स्थानीय स्तर पर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कराई गई है तथा उनके संचालन के लिए स्थानीय वनग्राम समितियों को हस्तांतरित किया गया है। बोरी बंधान योजना के अंतर्गत बहते नालों के पानी का उपयोग सिंचाई कार्य में करने के लिए बोरियों के माध्यम से बांध बनाये जाते हैं।

निगमित सामाजिक दायित्व निर्वहन (CSR) कार्य में संस्थानों के लिए वृक्षारोपण का प्रावधान

कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 135 में वर्णित संस्थाओं को निगमित सामाजिक दायित्व (Corporate Social Responsibility) का पालन करना अनिवार्य है। इस अधिनियम की - VII में दर्शाये गये कार्यकलापों को करने की बाध्यता है। अनुसूची - VII के कार्यकलापों के अन्तर्गत संस्थाओं के निगमित सामाजिक दायित्व निर्वहन में वृक्षारोपण कार्य करवाने का प्रावधान भी है।

निगमित सामाजिक दायित्व निर्वहन कार्यों (CSR) में संस्थानों के लिए निगम द्वारा किये जा रहे वृक्षारोपण संस्थानों के सामाजिक दायित्व निर्वहन में वृक्षारोपण का भी प्रावधान होने के फलस्वरूप विभिन्न संस्थानों के निगमित सामाजिक दायित्व निर्वहन कार्य (सी.एस.आर.) मद में मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम द्वारा विभिन्न संस्थानों के लिए वृक्षारोपण कार्य किये जा रहे हैं।

जैसे:- हैव्लस इंडिया लि. : हैव्लस इंडिया लि. के सी.एस. आर. मद की राशि से वर्ष 2018 से 2020 तक कुल 370 हे. वन क्षेत्र में सागौन वृक्षारोपण कराया गया है। यह वृक्षारोपण संस्था के निष्पादित हुए अनुबंध के अनुसार कराया है। सामी लैब बेंगलुरू की सी.एस.आर. मद की राशि से वर्ष 2018 से 2020 तक की अवधि में कुल 30 हेक्टेयर क्षेत्र में बीजा प्रजाति का रोपण किया है।

समाज के विकास को बल प्रदान करने हेतु निगमित सामाजिक दायित्व (CSR) हमेशा से ही निगम की प्राथमिकता रही है। निगम की सी.एस.आर. गतिविधियां एक ओर समाज के कमजोर वर्ग में लोगों को प्रोत्साहित कर स्थानीय स्तर पर आजीविका प्रदाय करने में मददगार हो रही हैं तो दूसरी ओर विभिन्न संस्थानों के निगमित सामाजिक दायित्व निर्वहन (CSR) मद की राशि से वित्त पोषण योजनाओं के अंतर्गत निगम के कार्य क्षेत्र के अंतर्गत वृक्षारोपण करवाने के फलस्वरूप पर्यावरण बचाने में भी अहम् भूमिका निभा रही हैं।

राज्य बांस मिशन अंतर्गत संचालित सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर की कहानी

आत्मनिर्भर भारत एवं म.प्र. की अवधारणा को सफल करने में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लघु एवं कुटीर उद्योगों द्वारा अकुशल, अर्द्धकुशल, कुशल श्रमिकों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं, अत: ये उद्योग किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं। राज्य बांस मिशन द्वारा उत्तर सा. वनमण्डल बालाघाट के पश्चिम बैहर परिक्षेत्र अंतर्गत संचालित सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) इसी दिशा में एक अभिनव प्रयास है, जिसके अंतर्गत बांस कला से जुड़े शिल्पकारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं एवं उनके द्वारा निर्मित उत्पादों का विपणन देश एवं प्रदेश स्तर पर हो रहा है। वर्तमान में संचालित सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर की स्थापना वर्ष 1981 में कुटीर उद्योग के रूप में हुई थी। इस केन्द्र में सूमघास रस्सी एवं कोशा बाड़ी के लिए बांस की चटाई बनाई जाती थी परंतु उपयुक्त घास की कमी के कारण वर्ष 1995-96 में यह उद्योग बंद हो गया।

2016 में वन विभाग एवं राज्य बांस मिशन के प्रयासों द्वारा इस उद्योग को पुन: नया स्वरूप देकर सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर के रूप में स्थापना की गई। बैहर एक आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है। इस सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) के अंतर्गत बांस शिल्पियों को बांस कला में न केवल प्रशिक्षण एवं बांस आधारित मशीनें उपलब्ध कराई जा रही हैं, अपितु कच्चे माल एवं निर्मित बांस उत्पादों हेतु बाजार भी उपलब्ध कराया जा रहा है। वर्तमान में सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) अंतर्गत बांस शिल्प कला का कार्य बैहर के मास्टर बांस शिल्पी श्री राजू बंजारा द्वारा अपने समूह के साथ किया जा रहा है। वन विभाग द्वारा मास्टर शिल्पी श्री राजू बंजारा को पूर्व में विभिन्न स्तरों पर बांस से निर्मित सामग्रियों यथा फर्नीचर, टेबल सेट, कुर्सी, सजावट का सामान आदि का प्रशिक्षण दिलवाया गया है।

इन प्रशिक्षणों के पश्चात श्री राजू बंजारा द्वारा 'वनांचल स्व-सहायता समूह' का गठन कर सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) में बांस शिल्प का उत्पादन कार्य प्रारंभ किया गया। समूह द्वारा सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर में बांस निर्मित उत्पादों यथा कुर्सी, टेबल, सोफा एवं सजावट के सामान आदि का निर्माण किया जा रहा है, जिनका प्रदर्शन एवं बिक्री प्रदेश एवं भारत के विभिन्न राज्यों में आयोजित मेलों में किया जाता रहा है। यह कार्यरत् समूह एक स्वत: संचालित लाभकारी समूह बन चुका है, जहां समूह द्वारा लाभ की राशि से कार्यरत् बांस शिल्पियों को भुगतान किया जा रहा है। वर्तमान में श्री राजू बंजारा द्वारा उत्तर सा. वनमण्डल बालाघाट में सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर अंतर्गत न केवल बांस शिल्प कला का कार्य किया जा रहा है, अपितु अन्य बांस शिल्पियों एवं आदिवासीजन को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है।

वर्तमान में श्री राजू बंजारा द्वारा लगभग 50 लोगों को बांस शिल्प कला का प्रशिक्षण दिया जा चुका है एवं लगभग 100 से अधिक परिवार इस बांस शिल्प कला के कार्य से रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। बांस निर्मित वस्तुओं के कच्चे माल हेतु कटंग बांस आदि का प्रदाय वन समितियों के माध्यम से किया जा रहा है। इस प्रकार यह व्यवस्था वन समितियों की आमदनी का एक अच्छा स्रोत भी सिद्ध हो रही है।

बांस की खेती करने वाले स्थानीय कृषकों को सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर के संचालन से प्रोत्साहन मिला है। उन्हें बांस के उपयोग की जानकारी मिली है। बांस कृषकों द्वारा उचित मूल्य पर बांस का विक्रय सामान्य सुविधा केन्द्र में कार्यरत शिल्पियों को किया जा सकता है। समूह द्वारा पूर्व में बांस भिर्रे की गुणवत्ता के अनुसार 50 हजार रुपये प्रति भिर्रा सकुल का भुगतान भी किया जा चुका है।

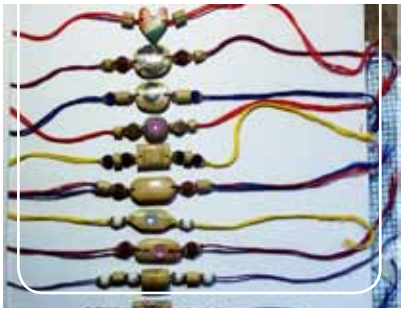

विगत रक्षाबंधन के पर्व में श्री ब्रिजेन्द्र श्रीवास्तव, वनमण्डलाधिकारी उत्तर सा. वनमण्डल बालाघाट के मार्गदर्शन में राखी बनाने का नवाचार किया गया, जिससे 10-12 महिलाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए। भविष्य में और अधिक महिलाओं के इस कार्य से जुड़ने की संभावना है।

वर्तमान में उत्तर सा. वनमण्डल बालाघाट स्तर पर सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर में बांस आधारित आधुनिक मशीनों जैसे- लेथ मशीन, बेल्ट सेंडर मशीन, नॉट रिमूवल मशीन आदि की स्थापना तथा न्यूमेटिक नेल मशीन, वैक्यूम प्रेशर एण्ड इम्प्रेगनेशर मशीन, क्रॉस कट मशीन आदि का क्रय किया जा रहा है जिससे बांस आधारित शिल्प उद्योग में रोजगार के और अधिक अवसर सृजित होंगे तथा बांस उत्पादों की गुणवत्ता भी सुनिश्चित की जा सकेगी। इस प्रकार भविष्य में सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर की सफलता की गाथा में और भी अध्याय जुड़ने की संभावना है।

बफर क्षेत्र में सफर योजना का आरम्भ

बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में बफर में सफर योजना के अंतर्गत माननीय वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह द्वारा म.प्र. शासन द्वारा हॉट एयर बैलून का शुभारंभ किया गया।

बांधवगढ़ के पनपथा जोन से हवा में उड़े हॉट एयर बैलून ने आसमान पर 2000 फीट तक की उड़ान तय की। इसके बाद यह बैलून वन मंत्री को लेकर बांधवगढ़ के जंगलों के ऊपर मंडराता रहा। बैलून के ऊपर से नीचे का नजारा अद्भुत और अचंभित करने वाला था। देश में हॉट एयर बैलून सफारी की शुरुआत पहली बार बांधवगढ़ में हुई है। वन मंत्री कुंवर विजय शाह ने कहा कि हॉट एयर बैलून की शुरुआत होने से पर्यटकों का रुझान और बढ़ेगा और पर्यटकों की संख्या में तेजी से इजाफा होगा।

पेंच राष्ट्रीय उद्यान में बफर में सफर योजना : दिनांक 31.12.2020 को बफर में सफर योजना के अंतर्गत खवासा बफर परिक्षेत्र में नव निर्मित मचान गणेश तालाब के शुभारंभ माननीय वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह म.प्र. शासन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में श्री आलोक कुमार (भा.व.से.) प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (वन्यप्राणी) मध्यप्रदेश, श्री विक्रमसिंह परिहार (भा.व.से.) मुख्य वनसंरक्षक एवं क्षेत्र संचालक पेंच टाईगर रिजर्व, श्री आर.एस. कोरी (भा.व.से.) मुख्य वनसंरक्षक सिवनी वृत, श्री एम.बी. सिरसैया (भा.व.से.) उपसंचालक पेंच टाईगर रिजर्व सिवनी, श्रीमती भारती ठाकरे स.व.सं., श्री एस.के. जोहरी स.व.सं., श्री बंसत पिछोड़े स.व.सं., श्री आशीष पाण्डेय अधीक्षक पेंच मोगली अभ्यारण्य सिवनी, श्री नीरज बिसेन परिक्षेत्र अधिकारी खवासा बफर एवं अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक वन्यप्राणी म.प्र. भोपाल द्वारा बफर में सफर योजना पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया कि माननीय मुख्यमंत्री म.प्र. शासन एवं माननीय वन मंत्री द्वारा प्रदेश में बफर में सफर योजना के माध्यम से कोर एरिया के अलावा बफर क्षेत्र में एवं क्षेत्रीय वनमंडल के क्षेत्र में पर्यटन की संभावना को देखते हुये यह योजना प्रारंभ की गई है। इस योजना से पर्यटन क्षेत्र में स्थानीय ग्रामीणों को रोजगार प्राप्त होगा। पेंच टाइगर रिजर्व सिवनी के बफर क्षेत्र में रात्रिकालीन सफारी, दिन की सफारी, मचान का शुभारंभ किया जा रहा है। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि वन एवं वन्यप्राणियों की सुरक्षा अकेले विभाग नहीं कर सकता इसमें स्थानीय ग्रामीणों, स्थानीय जनप्रतिनिधियों को

भागीदार बनाना चाहिये। पेंच टाइगर रिजर्व सिवनी को भारत में नम्बर 1 का दर्जा दिलाने में पार्क प्रबंधन का, स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों का सराहनीय योगदान रहा है। उपस्थित सम्मानीय जनप्रतिनिधि सांसद एवं विधायक महोदय एवं अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा अपने विचार व्यक्त किये गये एवं बफर में सफर योजना को स्थानीय ग्रामीणों को पर्यटन क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध होने में सार्थक बताया गया।

माननीय वन मंत्री जी द्वारा अपने उद्बोधन में बताया कि हिन्दुस्तान में पेंच टाइगर रिजर्व प्रबंधन की दृष्टि से नम्बर 1 पर है। वन एवं वन्यप्राणी प्रबंधन कार्यों को देखते हुए विशेषज्ञ दल द्वारा 100 में से 97 नंबर पेंच टाइगर रिजर्व को दिये गये हैं। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि जो श्रमिक वन एवं वन्यप्राणियों की सुरक्षा में लगे हुये हैं उनके सम्मान हेतु पार्क डे मनाये जाने की भी योजना है, जो श्रमिक की सेवा 12 वर्ष पूर्ण हो चुकी है उन्हें कुशल श्रमिक का पारिश्रमिक दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त आने वाले समय में श्रमिकों को प्रत्येक 3 वर्षो में नई सायकल तथा प्रत्येक वर्ष जूते, मोजे, गर्म श्वेटर, कैप प्रदान किये जावेंगे तथा उनका स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया जावेगा। टाइगर रिजर्व में कार्यरत जो श्रमिक महावत, चाराकटर का कार्य कर रहे हैं उन्हें उसी पद पर नियमितिकरण किये जाने की कार्यवाही की जा रही है। मान. वन मंत्री जी द्वारा स्कूली बच्चों के पार्क भ्रमण हेतु सांसद निधि से 20 सीटर 02 मिनी बस मान. विधायक, विधानसभा क्षेत्र बरघाट से 01 एम्बुलेंस प्रदाय बाबत् कहा गया। दिनांक 02.01.2021 को पार्क में कार्यरत श्रमिकों को जूते, मोजे, गरम श्वेटर, वाटर फिल्टर, सोलर लालटेन प्रदाय किया जाना बताया गया है।

पेंच टाइगर रिजर्व के बफर क्षेत्र में पर्यटन की संभावित गतिविधियों जैसे हॉट एयर बैलून आदि को प्रारंभ कर आने वाले समय में स्थानीय ग्रामीणों को गाइड, वाहन चालक आदि के रूप में पर्यटन क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराये जाने की योजना है। टुरिया में स्थित शहीद स्मारक स्थल पर शहीदों के सम्मान मे 7 दिवसीय शहीद मेला आगामी समय में लगाये जाने हेतु अपने वक्तव्य में कहा गया। पार्क में विशेष महत्वपूर्ण व्यक्तियों (VIP) हेतु 10 टिकट आरक्षित रखने तथा उसे 48 घण्टे पूर्व तक किसी अन्य को आबंटित न करने के संबंध में शासन स्तर से आदेश शीघ्र प्रसारित करने हेतु बताया गया। स्वागत समारोह उपरांत माननीय वन मंत्री महोदय द्वारा गणेश तालाब मचान का शुभारंभ उपरोक्तानुसार सम्माननीय जनप्रतिनिधियों, ग्रामीणों, विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में किया गया।

भोपाल में नीलगाय और पक्षियों का रेस्क्यू

दिनांक 20.10.2020 को नील गाय का बच्चा खेतों में माँ से बिछड़ कर आ गया जिसे उड़नदस्ता भोपाल के कर्मचारियों द्वारा सकुशल रेस्क्यू किया गया, नील के पैर पर खरोंच के निशान होने से वन विहार को सौंपा गया।

जंगली कबूतर और तोते जप्तकर उड़नदस्ता ने कार्रवाई कर जंगली पक्षियों को किया कैद से आजाद शनिवार दोपहर जहांगीराबाद बाजार में छापामार कार्रवाई कर भोपाल उड़नदस्ता टीम ने पिंजरे में कैद दस जंगली कबूतर और दो तोते जप्त किये। इस दौरान काफी तलाश करने पर भी इन जंगली पक्षियों का मालिक सामने नहीं आया। कार्रवाई के बाद इन जंगली कबूतरों और तोतों को पिंजरे की कैद से आजाद कर आसमान में उड़ा दिया गया।

जानकारों ने बताया कि शनिवार को अष्टमी का पावन अवसर होने के कारण इन पक्षियों को कैद से आजाद कराने का सनातन धर्म मे बहुत महत्व है वहीं इस्लाम धर्म में भी पंछियों को विशेषकर कबूतर को कैद से आजाद करने का बहुत महत्व बताया जाता है। मुख्य वन संरक्षक भोपाल, श्री रविन्द्र सक्सेना, वनमंडलाधिकारी भोपाल, श्री एच.एस. मिश्रा, तथा उपवन मंडलाधिकारी श्री सुनील भारद्धाज के निर्देश पर की गई इस कार्रवाई के दौरान भोपाल उड़नदस्ता प्रभारी राजकरण चतुर्वेदी, हरिशंकर शर्मा, यशवंत परिहार, फैसल हसन, भानु प्रताप सिंह और आसिफ हसन का प्रयास सराहनीय रहा।

स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स द्वारा सफल कार्रवाई

स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स वन एवं वन्यप्राणियों की सुरक्षा को लेकर हमेशा सुर्खियों में रहता है। वन विभाग की इस स्पेशल फोर्स का गठन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे वन्यप्राणियों के अवैध शिकार एवं उनके अवयवों का व्यापार करने वाले संगठित गिरोह का पर्दाफाश कर अपराध में लिप्त आरोपियों को पकड़कर उचित दंड दिलाने हेतु किया गया है। अपने इसी कर्तव्य का पालन करते हुए स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स ने पिछले कुछ महीनों में कई ऐसे अपराधियों को पकड़कर जेल भेज दिया है जो वन्यप्राणियों के शिकार एवं उनके अवयवों की तस्करी में शामिल थे। अभी हाल ही में जबलपुर के होटल दत्त रेजीडेंसी के पास वन्य प्राणी तेंदुआ एवं चीतल की खाल का व्यापार करने वाले एक ऐसे गिरोह को स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स ने पकड़ा है जो फर्जी सर्टिफिकेट बनाकर वन्यप्राणी अवयवों की तस्करी करता था गिरोह के पास 02 नग तेंदुए एवं 02 नग चीतल कुल 04 नग वन्यप्राणियों की खाल एवं एक चार पहिया टाटा टीगोर वाहन जप्त किया गया है। माह जून में स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स के द्वारा शिवपुरी के पास कार्यवाही करते हुए ऐसे ही एक गिरोह के 02 आरोपियों वन्यप्राणी पैंगोलिन का शिकार कर उसके शल्को का व्यापार करने के अपराध में पकड़कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है। आरोपी वर्तमान में न्यायिक हिरासत में हैं।

माह अगस्त में पन्ना टाइगर रिजर्व में बाघ का सिर एवं गुप्तांग काटने का मामला तूल पकड़ने के बाद प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) म.प्र. के निर्देशन में स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स को घटना की जाँच कर अपराध में लिप्त आरोपियों को पकड़ने हेतु निर्देशित किया गया जिस पर तत्काल कार्यवाही करते हुए स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स के जाँच दल का गठन किया गया जिसके द्वारा 26 दिन के कठिन इन्वेस्टीगेशन के उपरांत, अपराध करने वाले 03 आरोपियों को सफलतापूर्वक गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। इसी तरह से स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स वन एवं वन्य प्राणियों की सुरक्षा करने हेतु प्रतिबद्ध है यहां कार्य करने वाला प्रत्येक कर्मचारी पूरी ईमानदारी एवं समर्पण के साथ दिन रात वन्यप्राणियों की सुरक्षा करने हेतु संकल्पित है

टाइगर रिजर्व पन्ना में बाघ का सिर काटने वाले तीन आरोपी पकड़े गए

तीनों आरोपियों ने स्वीकार किया अपना अपराध

केन नदी के किनारे पड़ा सिर कटे बाघ का शव एवं पकड़े गए तीनों आरोपी।

सफलता की कहानी

निजी कृषि भूमि पर बांस रोपण द्वारा दोगुनी आय

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देने एवं किसानों की आय दोगुनी करने के उद्देश्य की पूर्ति करने में बांस आधारित आजीविका एवं रोजगार सृजन की महत्वपूर्ण भूमिका है। बांस का उपयोग परम्परागत बांस शिल्पकला के अतिरिक्त, पल्प, विनिर्माण, खाद्य एवं कपड़ा उद्योग आदि में किया जा रहा है। अत: बांस आधारित उद्योगों के लिए बांस की नियमित आपूर्ति किया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। बांस आधारित उद्योगों के लिए मात्र वनक्षेत्र से बांस की आपूर्ति करना संभव नहीं है। अत: राज्य बांस मिशन के अंतर्गत निजी कृषि भूमि पर कृषकों को बांस रोपण हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत प्रति पौधा रु. 120/- का अनुदान राष्ट्रीय बांस मिशन/राज्य बांस मिशन द्वारा दिया जाता है। बांस परिपक्व होने के उपरांत निजी क्षेत्र के बांस को कृषक अपनी स्वेच्छा से किसी भी क्रेता को बेच सकते हैं।

उत्तर सा. वनमण्डल बालाघाट अंतर्गत पश्चिम बैहर परिक्षेत्र में संचालित सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर में समूह द्वारा बांस शिल्पकला का कार्य किया जाता है, जिसमें बांस निर्मित उत्पादों जैसे फर्नीचर, टेबल सेट, सजावटी सामान आदि का निर्माण किया जाता है। समूह द्वारा बांस सामग्री निर्माण कार्य के लिए कच्चे माल के रूप में बांस निजी कृषकों से क्रय किया जा रहा है।

सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर अंतर्गत समूह द्वारा वन परिक्षेत्र उत्तर उकवा अंतर्गत ग्राम हिर्री के कृषक श्री हिरदयसिंह से उसके खेत की मेढ़ पर लगे दो भिर्रों बांस भिर्रा संकुल के 500 एवं 450 नग बांस का क्रय क्रमश: 50 हजार, 45 हजार रुपयों में किया गया। कृषक को उक्त भिर्रों से लगभग 20-25 हजार रुपये/भिर्रा संकुल आय की अपेक्षा थी। किन्तु कृषक को उसकी अपेक्षा से दोगुना लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही कृषक द्वारा अपनी कृषि भूमि पर धान एवं मक्का आदि फसलों का रोपण भी किया गया। जिससे उसे अतिरिक्त लाभ प्राप्त हुआ। राज्य बांस मिशन अंतर्गत निजी भूमि में कृषकों द्वारा किए जा रहे बांस रोपण से कृषक न केवल परिपक्व बांस के दोहन से आय प्राप्त कर सकते हैं अंतरवर्ती अंतराल खेती के द्वारा भी अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। इस

प्रकार, निजी कृषि भूमि पर बांस रोपण द्वारा कृषक न केवल राज्य बांस मिशन द्वारा अनुदान के हितग्राही होंगे अपितु बांस एवं फसल रोपण के द्वारा अपनी आय भी दोगुनी करने में सक्षम होंगे।

इसी जंगल में काटे हैं..!

कभी घाटों, नदी, नालों कभी दलदल में काटे हैं।
बड़ी तकलीफ में काटे बड़ी मुश्किल में काटे हैं।

मैं इसके पेड़ पौधों की हर इक बोली समझता हूं,
बरस चालीस मैंने भी इसी जंगल में काटे हैं।

जमीं नंगी, खरहरी खाट के बिस्तर मिले अक्सर,
शहर वाले समझते हैं कि दिन मखमल में काटे हैं।

हमारी पीर को केवल वही इंसान समझेगा,
भटक कर रास्ते जिसने कभी चंबल में काटे हैं।

हमें तो सरपरस्ती भी नहीं आकाओं की मिलती,
कि ऊपर से सियासत की पड़ी सांकल में काटे हैं।

कुआं, तालाब तो छोड़ो कि झिरिया तक नहीं मिलती,
कि हमने नौतपा गमछे महज छागल में काटे हैं।

बहुत से नागपाशों में गये हैं जिन्दगी के दिन,
गलतफहमी है लोगों को कि सब संदल में काटे हैं।

कहां पर कक्ष मिलते हैं हमें विश्रामगृह वाले,
दरख्तों के कहीं नीचे खुले भूतल में काटे हैं।

हमारी खुशनसीबी है जो सबको मिल नहीं पाती,
कि कुदरत के घने साये, घने आंचल में काटे हैं।

रत्नदीप खरे
वन विस्तार अधिकारी झाबुआ
9826043425

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति (अक्टूबर-दिसम्बर 2020)

श्री पुष्कर सिंह
(प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कैम्पा)

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति (अक्टूबर-दिसम्बर 2020)

श्री आनन्द बिहारी गुप्ता
(प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कैम्पा)

श्री शेनिल दत्त पटेरिया
(अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, NVDA)

श्री कृष्ण एस भदौरिया
(मुख्य वन संरक्षक, वन्य प्राणी)

श्री रामस्वरूप सिकरवार
(वन संरक्षक, मुख्यालय)

अंतर्राष्ट्रीय वन्यप्राणी-दिवस

International Snow Leopard Day 23rd October 2020

Scientific Name: *Panthera uncia*

Type : Mammals

Diet : Carnivore

International Cheetah Day 4th December 2020

Scientific Name: *Acinonyx jubatus*

Type : Mammals

Diet : Carnivore

International Monkey Day 14th December 2020

Scientific Name: *Macaca Fascicularis*

Type : Mammals

Diet : Primates

अखबारों के आईने में

2018 की रिपोर्ट... देश में 2014 से चार साल में तेंदुओं की आबादी 60% बढ़ी, जबकि मप्र में 88% का इज़ाफ़ा

टाइगर के बाद अब लेपर्ड स्टेट भी : मप्र में 3421 तेंदुए, देश में सबसे ज्यादा

देश में संख्या 12500 से ज्यादा पहुंची, इसमें 27% अकेले मप्र में

चंबल सैंक्चुरी... तेजी से बढ़ रहे घड़ियाल, इस साल 100 बच्चे और छोड़े

अहमदपुर नर्सरी में बना तितली पार्क, 8 फीट की तितली के साथ ले सकेंगे सेल्फी

पार्क में होंगी तितलियों की 8 से 10 प्रजातियां

अलग ही है तितली पार्क का क्षेत्र

तितलियों के लिए लगाए पौधे

सेल्फी पॉइंट पर आठ फीट की तितली

2 माह में तैयार किया पार्क

किसानों की आय दोगुनी करने सरकार का बांस उत्पादन पर फोकस

पांच साल में 25 हजार हेक्टेयर में होगी बांस की खेती

1600 हेक्टेयर निजी भूमि प्रोजेक्ट में शामिल

ऐसे अमल में लाया जाएगा प्रोजेक्ट

उद्यानिकी फसलों में बांस की मांग अधिक

चार प्रजातियां हैं प्रदेश में बांस की

कम लागत पर तैयार हो जाती है केंचुआ खाद

उत्पादन बढ़ाने में रामबाण सिद्ध हो रहा केंचुआ खाद

वन समितियों से तैयार करवाया जाएगा केंचुआ खाद

चाय पत्ती कैसे होती है केंचुआ खाद

केंचुआ खाद बनाने की विडो विधि

25 किलो केंचुआ 8 हजार में

केंचुआ खाद से पौधों का विकास तेजी से

वनिकी गतिविधियाँ कार्टूनिस्ट की नजर में

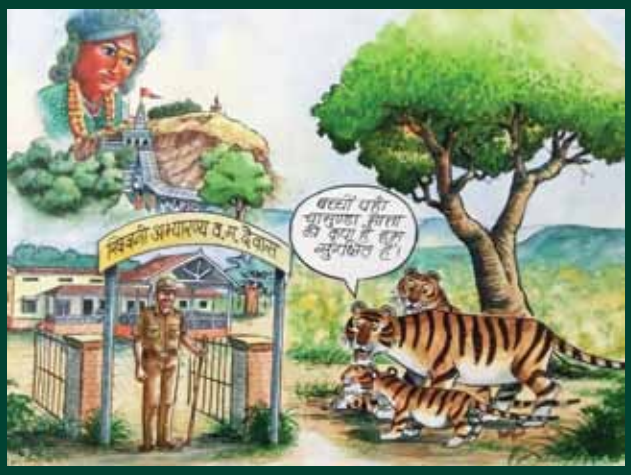

Published by:-APCCF (R/E) on behalf of MP Forest Department.
Printed by:-Super Printers & Plastics Works on behalf of Madhya Pradesh Madhyam.
Printed at :- Super Printers & Plastics Works, Plot No. 22 Nadeem House, Press Complex Zone 1, M P Nagar, Bhopal
Published at Room No. 140, Prachar Prasar Prakosth, Satpura Bhavan, Bhopal, M.P
Email:-dcfpracharprasar@mp.gov.in, Contact No. 0755-2524293, Editor:-Sanjay shukla, APPCF (R/E)